लघुकथा-संग्रह



किसका दोष

आशमा कौल

किसका दोष

(लघुकथा-संग्रह)

आशमा कौल

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-5536-074-8

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

KISKA DOSH (SHORT-STORIES) by Ashma Kaul

समर्पण

माँ स्व. श्रीमती रीता पारिमू
एवं
पिताजी स्व. श्री बिहारी लाल पारिमू
को समर्पित यह पुस्तक!
जो लाए मुझे सहर्ष भाव
इस खूबसूरत दुनिया में
पहचान दी, नाम दिया
नैतिकता का हाथ थमाया
और जाते हुए छोड़ गए
प्यार की दौलत मेरे हिस्से।

अनुक्रम

आत्मकथ्य

यह जलते दीये हैं...

नमस्कार मित्रो ! वैसे तो कविता लेखन मेरी पहली पसंद है लेकिन, इस बार मैं आपके लिए लघुकथा संग्रह लेकर आई हूँ। इसका पूरा श्रेय मैं आदरणीय यशसिद्धा चित्रा मुद्गल जी को देना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे कई बार लघुकथा लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। यह उनके प्रोत्साहन का ही नतीजा है कि मैंने खुद को इस लायक समझा और इस विधा में अपना पहला कदम रखा।

मेरा मानना है कि जहाँ कविता में कल्पना का वर्चस्व होता है, वहीं कहानी या लघुकथा मुख्यत: यथार्थ के धरातल से जुड़ी होती है। लघुकथा आकार में छोटी अवश्य होती है लेकिन, अपने भीतर एक पूरी दुनिया लिए होती है। मेरी बात से शायद आप सभी सहमत होंगे कि लघु-कथाएँ छोटे-छोटे जलते दीयों के समान होती हैं, जो सामाजिक विषमताओं रूपी अंधकार के दम्भ को अपने ज्ञान के प्रकाश से ध्वस्त करने का बड़ा हौसला रखती हैं।

ज़िन्दगी की इस आपा-धापी में हमारे आस-पास गलत और अनैतिक घट रहा, बहुत कुछ हम नज़रअंदाज़ कर देते हैं, लेकिन यह लेखक मन बहुत संवेदनशील होता है और कभी-कभी कुछ घटनाओं और समाज की शर्मनक विषमताओं एवं जटिलताओं से आहत हो ही जाता है। मेरा मन भी जब समाज में व्याप्त इन विसंगतियों और कुरीतियों से व्यथित होता है, तब लेखनी मेरी आवाज़ बन जाती है।

इस संग्रह में मेरी यही कोशिश रही है कि इन लघु-कथाओं के माध्यम से मैं अलग-अलग मुद्दों पर आवाज़ उठाऊँ। जो भी सामाजिक समस्यायें मुझे कचौटती रही हैं, उन्हें मैंने शब्द देने का प्रयास किया है। ये लघु-कथाएँ मैंने बहुत ईमानदारी से लिखी हैं और उम्मीद करती हूँ कि इनके माध्यम से मैं आपके मन तक पहुँच पाऊँगी।

मित्रो, एक बात और, लम्बी अस्वस्थता के बाद सभी साहित्यिक दोस्तों ने मेरा मनोबल बढ़ाया। विशेषकर, मेरी बड़ी बहनों जैसी आदरणीय कमल कपूर जी,

आदरणीय सुदर्शन रत्नाकर जी और मेरे परिवार से मिली हौसला अफज़ाई के लिए मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी।

साथ ही मैं बोधि प्रकाशन के प्रबंधक श्री मायामृग जी, जो कि स्वयं एक जाने-माने कवि हैं और उनकी पूरी टीम की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने बहुत प्यार एवं सम्मान से इन लघु-कथाओं को पुस्तक का रूप देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और उसे बखूबी निभाया।

अगर इस संग्रह की लघु-कथाएँ किसी भी प्रकार से समाज के उत्थान में लाभकारी सिद्ध होती हैं तो यही इस संग्रह की सफलता होगी। आशा करती हूँ पाठक वर्ग भी इसे अपना पूरा प्यार देगा।

शेष मिलने पर...

आपकी अपनी

- आशमा कौल

खानदानी

मंजू सफाई करते समय बार-बार अपना पल्लू ठीक कर रही थी।

आज मेमसाहब कहीं जरूरी काम से बाहर थीं और साहब घर की देख-रेख कर रहे थे।

साहब ड्रॉइंग रूम में बैठे अख़बार कम पढ़ रहे थे और अख़बार की आड़ में मंजू को ज्यादा निहार रहे थे। उसकी सुन्दरता और जवानी दोनों ही चरम पर थे। मंजू को साहब की घूरती नजरें बहुत असहज बना रही थीं और वह बार-बार अपने पल्लू से अपने गठीले बदन को ढंकने की कोशिश करने में नाकामयाब-सी हो रही थी।

अचानक फोन की घण्टी बजी और साहब ने फोन उठाया। शायद मेमसाहब कुछ पूछ रही थीं।

''नहीं-नहीं वहाँ जाने की जरूरत नहीं है, वह आदमी मुझे सही नहीं लगता है, उससे जितना दूर रहोगी, उतना अच्छा है। वे लोग हम जैसे खानदानी नहीं हैं।'' कहते-कहते साहब की नजर फिर मंजू के गदराए बदन पर जाकर ठहर गई।

फिक्स डिपॉजिट

अंतरा की अपने पति से आए दिन छोटी-छोटी बातों पर झड़प होती रहती और वह जितना अपने को शान्त करने की कोशिश करती, उतना ही सुधीर उसे भड़काने के नए तरीके ढूँढ़ता रहता।

आज सुबह से ही अंतरा का मूड ठीक नहीं है और सुधीर व्यस्त है। वह अलमारी से सारे 'एफ.डी.' निकालकर बैठा है कि किस-किस को रिन्यू करना है।

"अंतरा यह तुम्हारी एफ.डी. है, इन्हें आज याद से ऑफिस जाते समय रिन्यू करवा लेना"- सुधीर ने दो कागज अंतरा की ओर बढ़ाते हुए कहा।

हाथ में वह कागज लिए हुए अंतरा सोच रही थी कि सुधीर को एफ.डी. रिन्यू कराने की तो बहुत जल्दी है, लेकिन अपने रिश्तों को रिन्यू करने या सुधारने की कोई जल्दी क्यों नहीं है।

मुक्ति

रीना ने ऑफिस पहुँचकर लम्बी-सी साँस भरी। तभी, उसकी सहेली रेनू ने कहा- "क्या बात है, बहुत खुश लग रही हो आज।"

"हाँ, आज मेघना को क्रेच में छोड़कर आई हूँ। क्रेच वाली मैडम तीन हजार रुपये महीना लेगी और उसका पूरा ध्यान रखेगी।"

"हूँ, तो अम्मा जी का क्या", रेनू पूछ बैठी। "अम्मा जी के गाँव जाने से मैं बहुत खुश हूँ, उनके खाने-पीने और कपड़े-लत्ते के खर्चे से मुक्ति मिली।"

रेनू, क्रेच के और अम्मा जी पर होने वाले खर्चे के समीकरण को समझने की कोशिश कर रही थी। वह हैरत में थी कि रीना को खर्चे से मुक्ति मिली या सासू-माँ से।

दहेज

आज के दौर में दहेज लिए बिना शादी करना कोई छोटी बात नहीं है। उसने यही दुर्गम काम करके दिखाया और रातों-रात अपने मोहल्ले का हीरो बन गया।

वह शहर की कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ है। दहेज-विरोधी प्रचार करने के लिए कई बार संस्थाओं से सम्मानित भी हुआ है। उसने कसम खाई है कि वह आजीवन दहेज-विरोधी आन्दोलनों का हिस्सा रहेगा और अन्य नौजवानों से भी इस आन्दोलन में कूदने के लिए आग्रह करेगा।

शादी से पहले ही उसने सास-ससुर को साफ-साफ निर्देश दिए थे- ''मैं दहेज में कुछ नहीं लूंगा। घर में साज-सामान की कोई कमी नहीं है। बेटी को सिर्फ, एक जोड़ी कपड़ों में भेजिएगा।''

सास-ससुर तो राम जैसा दामाद पाकर धन्य हो गए, मगर औपचारिकता निभाते हुए बोले- ''बेटा हमारी एक ही बेटी है और अब इसका भविष्य, हमारा भविष्य है।''

इसी बात का इंतजार तो वह कर रहा था। छूटते ही बोला ''पिताजी उसके और अपने सुनहरे भविष्य की खातिर, आप दस लाख का चैक अपनी बेटी के नाम पर जमा करवा दें, बाकी की सारी कार्यवाही तो मैं स्वयं कर लूँगा। आप अधिक चिन्ता न करें।''

शादी अच्छी तरह संपन्न हुई और शादी की पहली सुबह, नींद से उठते ही वह बैंक के काउंटर पर खड़ा अपनी पत्नी के खाते की तफ्तीश कर रहा था। अगले दिन शाम को शहर की एक दहेज-विरोधी संस्था ने उसे सम्मानित करने हेतु एक बहुत बड़ा आयोजन रखा था।

अपना-अपना भगवान

मीना के घर में प्रतिदिन सुबह-सवेरे पूजा के समय ठाकुर जी को भोग लगाया जाता है। उसके बाद ही पति और बच्चों को नाश्ता परोसा जाता है। मन्दिर में भोग लगाते समय मीना की आत्मा संतुष्ट होती है और, उसे ऐसा अहसास होता है कि जैसे उसे भगवान मिल गए हों।

वही, दूसरी तरफ की झोंपड़-पट्टी में शीला के घर में चूल्हा कभी-कभी जलता है। खाली-पेट तो उसे कभी पूजा का ख्याल भी नहीं आता है। जिस दिन उसका पति कुछ कमाकर आटा-दाल ले आता है, उस दिन तो घर में जैसे दीवाली होती है। चूल्हे का धुआँ जैसे उसकी आरती की थाली का धुआँ होता है और पहला भोग वह अपने भूखे मासूम बच्चों को लगाती है। उस आत्म-संतुष्टि में ही उसे भगवान मिल जाते हैं।

गरीब का सपना

बुद्धिया की माँ झीरा, बुद्धिया के मृत शरीर के पास खड़े होकर छाती पीट-पीट कर विलाप कर रही थी और सारे गाँव वाले मूक-दर्शक बने खड़े थे।

माँ चीख रही थी ''बुद्धिया उठो, अब मैं तुम्हें स्कूल नहीं भेजूँगी, कभी नहीं भेजूँगी, एक बार माँ कहकर मेरे गले से लग जाओ।'' बहुत ही हृदय-विदारक दृश्य था। सबकी आँखें नम थीं। पुलिस आई, बयान लिए गए और झीरा ने चीख-चीखकर कहा'' हाँ, दारोगा जी मुझे फांसी पर चढ़ा दो। मैंने ही अपनी बुद्धिया को मार डाला है।'' यह कहकर सारा दृश्य उसकी आँखों के आगे फिर से तैर गया।

बुद्धिया तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। घर से उसका स्कूल आठ किलोमीटर दूर था और उस पथरीली राह पर रोज पैदल चलना बुद्धिया के लिए दण्ड समान होता था। रोज की तरह उस दिन भी बुद्धिया स्कूल के लिए तैयार हुई, पर अचानक जिद कर बैठी कि ''मुझे साइकिल लेकर दो वरन् स्कूल नहीं जाऊँगी।'' झीरा जो अपनी गरीबी से वैसे ही बहुत परेशान थी और अपना पेट काटकर स्कूल की फीस देती थी, बिफर उठी, ''तेरा बाप तो चल बसा पर कोई जायदाद छोड़कर नहीं गया, चुप-चाप स्कूल जा वरन् बहुत पिटेगी।'' बुद्धिया की एक और 'ना' पर झीरा बेलन उठा लाई और बुद्धिया को तब तक पीटती रही जब तक उसके प्राण-पखेरू नहीं उड़ गए। झीरा धरती पर हताश पड़ी रो रही थी, ''यह मैंने कैसा सपना देखा था, अब मैं किसी बच्चे को स्कूल नहीं भेजूँगी, बुद्धिया तुम वापस आ जाओ, मैं तुम्हें कभी स्कूल नहीं भेजूँगी।''

दोज़ख़

किश्तवार जिले के पहाड़ी गाँव छत्तरों को जैसे कुदरत ने खुद अपने हाथों से जन्नत बनाया था। वह मासूम गड़रियों की बस्ती थी। बारह वर्ष की फातिमा बी अपने माता-पिता और छोटे भाई के साथ अपनी ज़िन्दगी के सुन्दर दिन वहाँ बसर कर रही थी। वह सुबह अपनी अम्मी का हाथ बंटाती और दिन में पाठशाला जाती। शाम को हरे-हरे पहाड़ों पर भेड़े चराने में उसे बहुत मजा आता।

सोते-जागते वह माँ से कहती, माँ हम तो जन्नत में रहते हैं। हमारी जैसी किस्मत किसी और की कहाँ?

पर उसकी ज़िन्दगी पर अचानक पड़े एक काले साये ने उसकी जन्नत को दोज़ख़ में बदल दिया। एक शाम वह भेड़ों को चराने निकली तो एक आतंकवादी की गंदी नजर उस पर पड़ी और उसका अपहरण कर लिया गया।

मासूम कोमल फातिमा के बहते आंसुओं का असर उन वहशी दरिन्दों पर क्या होता। कई दिनों तक प्रताड़ित करके वे उसको उसके घर वापस छोड़ आए। घरवाले गुस्से में थे और माँ जार-जार रो रही थी, ''या खुदा, तेरा शुक्र है, मेरी बच्ची उस दोज़ख़ से वापस घर आ गई।''

फातिमा अपनी माँ के आँसू पोंछते हुए धीरे से बोली-''माँ मेरे लिए तो अब यह पूरी कायनात ही दोज़ख़ है।''

पगार और पेंशन

राजन दफ्तर से आते ही चिल्लाया ''गौरी कहाँ हो, पानी लाओ।''

''आई जी'' कहते हुए गौरी पानी का गिलास लिए हाजिर हो गई। पति देव का बैग उठाते हुए गौरी को कुछ याद आया ''आपने हल्दी का पैकट लाया है जी।'' ''नहीं'' बड़े कर्कश स्वर में राजन ने उत्तर दिया। ''अरे, आज आप फिर भूल गए, तीन दिन से कह रही हूँ।''

त्यौरियां चढ़ाकर राजन बोला- ''तुमने तो मुँह से कह दिया बस, तुम्हें क्या मालूम दफ्तर में कितना काम होता है। घर में सारा दिन आराम फरमाती हो, गप्पें मारती हो और टी.वी. का आनन्द लेती हो।''

''तुम्हें क्या मालूम पैसा कैसे कमाया जाता है, तुम्हें तो सिर्फ हुकुम चलाना आता है।'' गौरी चुपचाप सुन रही थी। ''अब खड़ी क्या हो, जल्दी से मेरे कपड़े और तौलिया लाओ, मुझे नहाना है।''

''जब तक मैं नहाकर निकलूँ, रिंकू को खाना खिलाकर सुला दो वरन् मुझे परेशान करेगा। होमवर्क तो करवा दिया है न उसको।'' एक ही साँस में न जाने कितने आदेश दे डाले राजन ने।''

खाना खाकर राजन लेटते हुए बोला- ''दफ्तर में आजकल बहुत काम है और अभी रिटायर होने में दस साल पड़े हैं। उसके बाद ही आराम से पेंशन मिलेगी।''

उसके खर्राटों की आवाज में गौरी मन ही मन बुदबुदाई है- ''राजन को काम के लिए वेतन तो मिलता है। मैं तो बिना पगार लिए, पूरा दिन काम में लगी रहती हूँ और मरने तक न तो मुझे रिटायरमेंट मिलेगा और न ही पेंशन।''

जीत

रवि और रजनी के जीवन-सागर में तो आज जैसे खुशी की लहरें उमड़ रही हैं।

दोनों मूक-बधिर हैं। इशारों-इशारों में ही उन्होंने अपनी बेआवाज ज़िन्दगी को एक सुन्दर और मीठी-सी आवाज दी है। प्यारी-सी बेटी नयना के रूप में। किसी मित्र ने उन्हें आज ही बताया है कि उनकी नयना उनकी तरह बेआवाज नहीं है। वह हँसती-रोती है और सुन भी सकती है। एक उसके सामने खिलौने बजा रहा है और दूसरा उसके हाव-भाव से उसकी श्रवण-शक्ति को टटोल रहा है। आज सुबह से वे दोनों अपने बच्चे के कई इम्तिहान ले चुके हैं और उसे उत्तीर्ण भी कर चुके हैं।

रवि और रजनी की आँखों की चमक देखकर ऐसा लग रहा है जैसे दोनों ने ज़िन्दगी की एक बहुत बड़ी जंग जीत ली है।

उनके आँसू मौन भाषा में कह रहे हैं कि अब वे दोनों अधूरे नहीं हैं। उनका बच्चा अब उनकी आवाज बनेगा।

कातिल कौन

सुबह उठने के साथ ही अख़बार की सुर्खियों पर मेरी नजर दौड़ रही थी। आज फिर राष्ट्रीय राजमार्ग-4 पर, एक दुर्घटना में जवान आदमी की मौत। तेज स्पीड से आती बस ने एक पैदल सवार को टक्कर मारी। ड्राइवर ने डर के मारे बस नहीं रोकी, बल्कि उस आदमी को दूर तक घसीटता हुआ ले गया।

ड्राइवर फरार हुआ और घटनास्थल पर लोगों का मजमा लग गया। उस समय आदमी जिंदा था। धीमी-धीमी साँसें चल रही थी, लेकिन खून बहुत बह रहा था। लोग तमाशबीन बने खड़े थे लेकिन, कोई भी मदद के लिए आगे नहीं आया। किसी भले मानस ने पुलिस को फोन लगाया।

पुलिस भी आधे घण्टे बाद पहुँची। स्थल का मुआयना करने लगी। वह व्यक्ति वहीं पड़ा तड़प रहा था। पुलिस अधिकारी ने अपने फर्ज की पूर्ति कर ली, यह कहकर कि ''यह जगह हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं आती ''दूसरे थाने से पुलिस आई। बहसबाजी हुई और आदमी को अस्पताल ले जाया गया। वहाँ भी डॉक्टर व्यस्त थे। इधर कागज़ी कार्यवाही में समय लग रहा था उधर आदमी की स्थिति बद-से-बदतर होती जा रही थी। जब तक डॉक्टर आया और आदमी को ऑपरेशन थियेटर ले जाने लगे, उसी बीच उसने दम तोड़ दिया।

यह सारी ख़बर मेरे दिमाग में हलचल मचा रही थी कि उस व्यक्ति का कातिल आखिर कौन था, वह खुद, अनाड़ी बस ड्राइवर, वहाँ खड़े लोग, पुलिस अधिकारी या अस्पताल के व्यस्त डॉक्टर।''कातिल आखिर कौन था।''

भूख

गायत्री अपने रुपये पल्लू में बांधती हुई मालिक की कोठी से बाहर निकली है। बाहर अंधेरा बढ़ रहा है और उसकी चाल में भी तेजी आ गई है।

वह जल्दी से जल्दी अपने बच्चों के पास पहुँचना चाहती है। उसके बच्चे दो दिन से भूखे हैं और घर में एक दाना भी खाने को नहीं है।

आज मजबूरी में अपनी इज्जत को दांव पर लगाकर उसे बच्चों की भूख मिटाने के लिए पहले उस वहशी दरिन्दे की भूख मिटानी पड़ी है।

दौलत

पड़ोस के खाली प्लॉट पर कुछ दिन से मकान बनना शुरू हुआ है। कुछ मजदूर काम पर लगे हैं, उनमें से दो औरतें और दो बच्चे भी हैं। औरतें दिनभर मजदूरी करती हैं और बच्चे इधर-उधर घूमते रहते हैं।

आज सवेरे मैंने अपनी बिटिया के लिए सेब काटा मगर उसने खाने से इंकार कर दिया। उसे मनाने मैं उसके पीछे-पीछे आंगन में प्लेट लेकर आ गई। वह चीखने लगी, ''मम्मा कितनी बार कहूं मुझे सेब नहीं खाना, मेरा मन भर गया है। इसे उठाकर फेंक दो पर मम्मा प्लीज मुझे खाने को मत कहो।''

मैंने अचानक देखा कि गली में घूमती चार मासूम निगाहें मुझे और प्लेट को घूर रही हैं। मैंने उन्हें पास बुलाकर प्लेट पकड़ाई और वह खुशी में ऐसे झूम उठे मानो उनके हाथों में दुनिया जहान की दौलत आ गई हो।

औरत सूरज है

कमरे की खिड़की पर खड़ी अल्का एक-टक सूरज का अस्त होना देख रही थी। उसे अपने भीतर कुछ डूबता-सा महसूस हो रहा था। उसे लग रहा था कि सूरज और उसमें कितनी समानता है, दोनों ही अस्त हो रहे हैं।

तभी, अचानक बेटी की आवाज ने उसे ध्यान दिलाया कि रात के भोजन की तैयारी का समय हो गया है। थकी हुई अल्का आकाश में सूरज की फैली हुई लालिमा को आँखों में भरकर सोच रही थी कि औरत तो सूरज ही है। रोज रात को थककर अस्त हो जाती है और फिर पूरी नई स्फूर्ति के साथ सवेरे घर वालों में प्यार की रोशनी बांटने में जुट जाती है।

मन की बात

आंगन की चौखट पर खड़ी मंदिरा को अचानक ही आज सारी पुरानी बातें याद आने लगीं। उसे याद आ रहा था, जब उसने दुल्हन बनकर इस घर में प्रवेश किया था तो सारा घर-आंगन उसकी महक से महकने लगा था। महेश ने भी उसे भरपूर प्यार दिया था और उनका घर-बच्चों की किलकारियों से गूँजने लगा। लेकिन, समय के क्रूर हाथों ने असमय ही मंदिरा का सिंदूर पौंछ दिया। फिर भी बच्चों को उसने अपनी जान से भी ज्यादा प्यार दिया और घर के दायित्वों की फुलवारी को वह अपने रक्त से सींचती रही।

उसके छोटे-छोटे पंछी भी अब बड़े हो गए थे और ऊंची उड़ानें भरने लगे थे। लेकिन, जिस बात से वह डरती थी, वही हुआ, बेटी तो प्रेम-विवाह कर पति के घर चली गई और माँ की कोई खोज-ख़बर नहीं ली। आज बेटा भी अपनी-दुल्हन को लेकर नया घर बसाने जा रहा है।

''माँ हमें आशीर्वाद दो'', बेटे की आवाज से मंदिरा की तंद्रा टूटी और वह वर्तमान में लौट आई। आँखों में आँसू देखकर बेटा बोला ''माँ मैं आज तक तुम्हारे इशारे पर चला हूँ, लेकिन अब मैं मर्जी से जीना चाहता हूँ।'' मंदिरा ने बिना कुछ कहे बेटा-बहू को सीने से लगा कर विदा किया- ''जुग-जुग जियो, दूधो-नहाओ और पूतो फलो'', लेकिन मन की बात वह बेटे से न कह सकी कि ''बेटा मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।''

बेटा-बहू चले गए और मंदिरा के मन में दबे शब्द अन्दर ही टूटकर उसे चुभते रहे। वह सोच रही थी कि बेटे के मन में आई हर बात, हर इच्छा वह बिना बताए ही जान लेती थी, लेकिन आज बेटा उसके मन की बात जान नहीं पाया या फिर जानकर भी अनजान बना रहा।

जाहिल

''माँ यह कैसा खाना बना कर लाई हो, तुम्हें कुछ समझ है कि नहीं'' -बेटे की तीखी बात सुनकर माँ घबरा गई। इतने सारे दोस्तों के सामने उसका मुँह शर्म से पीला पड़ गया।

वह खुद को संभालने की कोशिश में थी कि दूसरा प्रहार बहू ने किया ''कितनी बार कहा है ढंग के कपड़े पहना करो और अपनी देहाती बोली को छोड़कर शहरी भाषा बोलो।''

''हाँ बेटा, मैं तो जाहिल ही रही'' कहती हुई माँ अपने कमरे में जाकर फफक-फफक कर रो पड़ी।

आज उसे महसूस हो रहा था कि दुनिया में उससे बड़ा जाहिल और गंवार शायद कोई नहीं है। दोस्तों के जाते ही माँ ने बेटे से साहस जुटाकर पूछा- ''बेटा तुमने पहले शब्द मुझसे सीखे, तुम कल तक मेरे हाथ का खाना खुशी से खाते रहे और मेरी इस सूती साड़ी के आंचल की गर्मी में ही पनपे। तो आज अचानक तुम्हें मैं इतनी जाहिल कैसे नजर आई।''

बेटा माँ की बात सुनकर सोच में पड़ गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि माँ वास्तव में जाहिल है या अंधी चकाचौंध में रहकर वह ज्यादा समझदार और रुतबेदार हो गया है।

दुल्हन

शादी के सुर्ख जोड़े में खड़ी काम्या अपने माँ-बाबा की आँखों में आँसू देख रही थी। काम्या उन आंसुओं में अपने अतीत की यादें महसूस करते हुए एक-एक कदम बढ़ाकर उनसे दूर जा रही थी।

तभी किसी की आवाज कान में पड़ी- ''ये लोग रोने-धोने में बहुत समय लगा रहे हैं, इस तरह तो देर हो जाएगी। जल्दी से दुल्हन को गाड़ी में बिठाओ।

वह सोच रही थी कि एक लड़की किस तरह अपना घर छोड़कर उस नई दुनिया में प्रवेश करती है, जहाँ उसके लिए सभी अजनबी होते हैं।

तभी किसी ने काम्या का हाथ पकड़कर उसे गाड़ी में बिठाया और वह बन्द शीशे में से माँ-बाबा के हिलते हाथों को देखकर सिसक उठी।

सही सलाह

राधा को घर, बहू लाए अभी महीनाभर ही हुआ था कि आँखों में आँसू लिए वह अपनी सहेली के पास दिल हल्का करने चली आई थी।

''अरुण मेरा कितना ध्यान रखता था। हर समय मेरे आगे-पीछे रहता था। मेरे हाथ से खाता और मेरी गोदी में ही सिर रखकर सो जाता था'' राधा अपने दिल का दर्द बयान कर रही थी ''जब से घर में बहू आई है, मेरे पास आने का अब उसे वक्त ही नहीं होता'' कहते-कहते राधा की अश्रुधारा बह निकली।

मीना जो बहुत देर से यह सुन रही थी, राधा के पास आकर बोली ''देखो राधा तुम्हारा बेटा किसी की बेटी ब्याह कर लाया है। दोनों व्यस्त हैं किन्तु सुबह शाम तो तुम्हारी आँखों के सामने होते हैं।'' ''तो इससे क्या'' राधा तुनक कर बोली।

''जरा तुम अपनी समधिन का सोचो जिसकी इकलौती संतान भी आँखों से इतनी दूर चली गई।'' अब कहो लड़की की माँ का कलेजा कितना बड़ा होता है कि खुशी-खुशी दिल के टुकड़े को अनजाने घर भेज देती है।''

अब राधा तसल्ली भरी मुस्कान लिए अपने घर जा रही थी।

तलाश

उसके छोटे पांच भाई-बहन थे। वह उन पांचों को पालती थी। उन सबको नहलाना, कपड़े पहनाना, घर के अन्य काम करना उसकी रोज की दिनचर्या थी। वह कब बच्चे से माँ हो गई थी, यह किसी को भी पता नहीं चला।

माँ मुँह अंधेरे लोगों के घर काम पर निकल जाती और बाप पूरा दिन नशे की हालत में खाट पर पड़ा रहता था। उसके छोटे-छोटे कन्धे छोटे भाई बहनों का भार उठाकर मजबूत हो गए थे और उसकी टांगें खड़े-खड़े फौलादी हो गई थीं।

वह हर समय सूनी नजरों से कुछ तलाशती रहती थी। शायद, अपने बचपन को जो गरीबी में कहीं खो गया था।

गुण-अवगुण

एक दिन जिन गुणों की वजह से रूपाली का ब्याह शहर के बड़े नामी घराने में हुआ, आज वही गुण उसकी मौत की वजह बन गए।

रूपाली की सलोनी सूरत, मधुर व्यवहार और कार्य-कुशलता देखकर रूपाली के सास-ससुर बिना किसी दान-दहेज के ही उसे बहू बनाकर अपने घर ले आए। उसकी सुन्दरता और गुणों की चर्चा सारे रिश्तेदारों और जानने पहचानने वालों में अक्सर होती।

उसकी सुन्दरता का जिक्र होता तो वह पति की नजरों से गिर जाती और जब उसकी कार्य-कुशलता की तारीफ होती तो उसकी सास के दिल पर सांप लोटने लगते।

उसके ये सारे गुण कब उसके अवगुण बन गए रूपाली जान ही न पाई। पति की मार और सास-ससुर के तानों से पीड़ित, गुणों की खान रूपाली ने आज सवेरे ही पंखे से झूलकर आत्महत्या कर ली है।

स्वच्छता अभियान

''गोयल साहब, सरकार ने आजकल पूरे देश में स्वच्छता अभियान का बिगुल बजाया हुआ है, इस मामले में आपका क्या विचार है?'' वर्माजी ने चुटकी लेते हुए अपने पड़ोसी से बात छेड़ी।

''यह तो सरकार ने अच्छा काम शुरू किया है। अगर इसमें सभी साथ दें तो यह अभियान अवश्य सफल होगा।'' गोयल जी ने ईमानदारी से राय दी।

वर्माजी तो जैसे भरे बैठे थे-''अरे वाह गोयल साहब, काम सरकार का और लग जाएं हम सभी। अपना घर साफ रखते हैं, आंगन साफ रखते हैं और आप कहें तो कल से सड़क पर भी झाड़ू लगा देंगे।'' कुटिल मुस्कान भरते हुए बातों में व्यस्त वर्माजी को पता ही नहीं चला कि कब पीछे से आकर श्रीमती वर्मा ने कूड़े का बालटीन गोयल साहब की नज़रों के सामने ही सड़क पर पलट दिया। वर्माजी की नज़र पड़ी तो वह झेंप गए।

''वर्माजी आप सच कहते हैं, अगर आप जैसे कुछ और परिवार इस शहर में बस गए तो यहाँ का 'स्वच्छता अभियान' तो 'कूड़ा अभियान' में बदल जाएगा।'' इस बार मुस्कुराते हुए चुटकी लेने की बारी वर्मा जी की थी।

चोट

आज वह अपनी करनी पर पछता रहा है। न रोने की हालत में है, न कुछ कहने की हालत में है। उसकी पत्नी अपने पुत्र की लाश देखकर छाती पीट रही है और वह स्तब्ध, हताश खड़ा है।

वह अपने एरिया का काउंसलर है। पैसा कमाने की गरज से कई बड़े वादों की दुहाई देकर, लोगों को बेवकूफ बनाकर, वोट पाने में सफल हो गया था।

सड़कों के गड्ढों को सिर्फ रेत-बजरी से भरवा कर, उसने जनता से किया वादा निभाया था। उसके घर के लोग भी इन बातों से नाखुश थे। पत्नी जब-जब उसे जनता से किए वादों की याद दिलाती, तब वह कुटिल मुस्कान भरकर कहता- ''जानेमन वादे तो तोड़ने के लिए ही किए जाते हैं।''

बारिश का मौसम आया तो सड़कें तो टूटनी ही थीं। लाखों की लागत से बनी सड़कें ठीक पुरानी हालत में वापस पहुँच गईं। बड़े-बड़े गड्ढे आए-दिन अपना करतब दिखाने लगे। कभी गाड़ी फंस जाती तो कभी रिक्शा उलट जाता। लोग परेशान थे और काउंसलर महाशय सबकी परेशानी यूँ हँसकर टाल रहे थे- ''यह मेरी नहीं, इन्द्र देवता की मेहरबानी से हो रहा है। कुछ हवन वगैरह करवाओ, तभी बात बनेगी।''

ऐसा तो उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसके बेटे के साथ ऐसा हादसा हो जाएगा। कॉलेज से आते समय उसके बेटे की मोटर साईकिल गड्ढे में फंसकर ऐसी उछली जैसे कोई फुटबॉल और वहीं उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

उसका मन चोट खाकर जार-जार रो रहा था कि काश उसने वायदा खिलाफी करके लोगों के विश्वास को चोट न पहुँचाई होती, तो आज उसे यह दिन न देखना पड़ता।

जीवन की शतरंज

दया के दुख का समय तो तभी शुरू हो गया था, जब उसका पति उसे चार बच्चों की माँ बनाकर इस दुनिया से कूच कर गया था।

मजदूरी करके एक समय का चूल्हा वह जैसे-तैसे जला ही लेती थी। लेकिन, वह मजदूरी भी चली गई तो उनके फांके लगने शुरू हो गए। इस हालात में भी उन बच्चों ने माँ का बहुत साथ दिया, लेकिन वह पेट की आग में उन मासूमों को तड़पता न देख सकी। फिर उसने वह फैसला लिया जो एक माँ सीने पर पत्थर रखकर ही कर सकती है। वह अपने बच्चों को तिल-तिल कर मरते नहीं देख सकी और तीन बच्चों को बचाने के लिए एक बच्चे की कुर्बानी देना सही समझा।

मुट्ठी में पचास रुपये का नोट और आँखों में समन्दर लिए घर की देहरी पर खड़ी दया जैसे जीवन की शतरंज में सब हार आई थी। उसने अपने दिल के टुकड़े को आज मात्र पचास रुपये में बेच दिया।

पांच दिन के बाद आज दया के घर में चूल्हा जला है। कंकाल से तीन बच्चों के चेहरों पर हल्की मुस्कान तैर रही है, लेकिन यह कोई नहीं जानता कि भूख की आग दया और उसके ममत्व को लील चुकी है। अब वह केवल एक जिन्दा लाश है।

कुछ छूट गया क्या

''पापा कुछ और तो नहीं रखना बैग में'' -आदित्य ने बैग को बन्द करते हुए पूछा।''नहीं बेटा, यही सब था''रॉय साहब विश्वास से बोले।

आज भी याद आ रहा है उन्हें वह दिन जब बेटे को खुशी-खुशी पढ़ाई के लिए विदेश भेजा था और वह पढ़कर वहीं शादी करके सैटल हो गया। बच्चे की खुशखबरी मिलते ही वह पोते का मुँह देखने अमेरिका आ पहुँचे और आज रॉय साहब वापस भारत आ रहे हैं। अपनी उसी अकेली दुनिया में जहाँ वह बंगले में अकेले ही रहते हैं।

तभी बेटे की आवाज ने उन्हें चेताया- ''पापा कहाँ खो गए। पासपोर्ट, टिकट सब ले लिया न आपने, कुछ छूट तो नहीं गया।

रॉय साहब अचानक भावुक हो उठे लेकिन, तुरंत संभलकर बोले ''आदित्य सब ले लिया, कुछ नहीं छूटा।'' लेकिन उनका दुखी मन कह रहा था कि उनकी तो सारी दुनिया यहीं रह गई है।

आत्म-सम्मान

विजय राज के इकलौते सुपुत्र का आज विवाह है। बराती सजे-धजे चलने को तैयार हैं। आज उसकी और उसकी पत्नी आभा के ख़्वाबों की तामील होगी। आभा सुर्ख जोड़े में दुल्हन-सी ही दिख रही है और पूरे होशो-हवास में हर किसी की उपस्थिति का जायज़ा ले रही है।

घर के एक कोने में बैठी बुढ़िया, विजय राज की माँ जैसे किसी के संदेश का इंतजार कर रही है। पर किसी का भी ध्यान उसकी तरफ नहीं जा रहा है।

धीरे-धीरे घर खाली होने लगा है। माँ का धीरज डोल रहा है वह धीरे से पुकार रही है- ''विजय, बेटा विजय, क्या मैं नई साड़ी पहन लूँ।''

इतनी व्यस्तता में शायद विजय राज माँ को सुन नहीं पा रहे और आभा भी जैसे सुनना नहीं चाहती। बाहर बैण्ड बाजे की आवाज और तेज हो गई है और घर के भीतर अब सन्नाटा छा रहा है। आभा ने अपनी आया को आवाज दी ''मैना नये कपड़े पहन कर जल्दी निकलो देर हो रही है'' और माँ जी विस्मित और पनीली आँखों से अभी भी बेटे के बुलावे का इंतजार कर रही हैं।

आभा तेज कदमों से चलती हुई आ गई है ''माँ हम जा रहे हैं। आपका यहीं रहना ठीक होगा, वहाँ आपको कौन संभालता फिरेगा।''

माँ का मन भर आया कि कहे बेटा मुझे भी पोते की शादी देखने का चाव है, लेकिन वह कह न पाई और दोनों हाथों में नई साड़ी समेट कर वहीं दरवाजे की मुंडेर पर बैठ गई। उसके आत्म-सम्मान ने उसे कुछ भी कहने से रोक दिया और अपने आंसुओं को भी आँखों की दहलीज में ही उसने किसी तरह थाम लिया।

दूसरी बेटी

साथ वाली पड़ोसन को दरवाजे पर देख रीटा ने अनदेखा करने की कोशिश की। लेकिन, अगले ही पल पड़ोसन ने रीटा के पास जाकर बिटिया के जन्म की बधाई दी तो रीटा के सब्र का बांध टूट गया- ''अरे कैसे पड़ोसी हो तुम लोग, पिछले दस दिन से कोई भी मुझे बधाई देने नहीं आया।

''अच्छा तो इस बात पर नाराज हो तुम'' - हँसते हुए पड़ोसन ने कहा। ''हमारे यहाँ दूसरी बेटी के जन्म पर बधाई देना ठीक नहीं समझते।''

रीटा ने हैरानी से कहा- ''पर ऐसा क्यों'' बड़ा अजीब शहर है आपका दीदी। ''हाँ भई यही रिवाज है हम लोगों में, बेटा हो तो बधाई ही बधाई और अगर बेटी हो जाए तो कोई खुशी नहीं मनाई जाती, न ही बधाई दी जाती है।'' पड़ोसन धीमे स्वर में बोल रही थी- ''और तो और दूसरी बिटिया के जन्म पर बधाई देने से उस घर के लोग भी बुरा मान जाते हैं, जहाँ बिटिया जाई होती है।''

रीटा का गुस्सा अब तक पूरा काफूर हो गया था। उसे अपने पड़ोस के लोगों की छोटी बुद्धि पर तरस आ रहा था।

मन ही मन वह सोच रही थी कि ऐसी तुच्छ मानसिकता वाले लोगों से अपनी बच्ची के लिए आशीवार्द की उम्मीद रखना ही बेवकूफी है।

जिम्मेदार

जयंती बदहवास फर्श पर बैठी सिर पटक-पटक कर चीख रही थी और पूरा पड़ोस वहाँ कमरे के पंखे से लटकी हुई उसके बेटे अजय की लाश को देख अचंभित था।

मौके पर पुलिस आ चुकी थी और कमरे की छान-बीन कर रही थी। जयंती के पति रवीश रोते-रोते कह रहे थे ''बेटा यह तुमने क्या किया, अभी तो परिणाम आए भी नहीं। यह मेरी वजह से ही हुआ। हाँ मैं ही गुनहगार हूँ तुम्हारी मौत का। न मैं तुम पर हमेशा अधिक अंक लाने का दबाव डालता और न आज मुझे यह दिन देखना पड़ता।''

पुलिस अपनी कार्रवाई करके जा चुकी थी, और अधिकतर पड़ोसी भी निकल गए थे। जयंती बेहोशी के आलम में कुछ बुदबुदा रही थी, तभी रवीश ने बेटी को आवाज लगाई कि वह माँ को संभाले। बिटिया पानी का गिलास लेकर माँ के मुँह से लगाने लगी। अचानक जयंती ने गिलास पटक दिया और बेटी को छाती से लगा कर चीखने लगी- ''हमें माफ कर दो, हम तुम्हारे भाई के दोषी हैं। हमें ज्यादा अंक नहीं चाहिए, तुम कभी ऐसा न करना, मुझे छोड़ कर मत जाना'' विलाप करते हुए जयंती फिर से बेहोश हो गई, लेकिन उसकी आहें चारदीवारी के अन्दर गूँज रही थीं।''

स्कूल से आए अजय के मित्र और अध्यापक शायद यही सोच रहे थे कि क्या इस हादसे के जिम्मेदार सिर्फ माता-पिता हैं या हमारे देश की शिक्षा प्रणाली भी अजय की मौत की जिम्मेदार है।

माफी

हर वर्ष की तरह मेघ और मेघना आज भी माँ की पुण्यतिथि पर अपने पापा के साथ मन्दिर गए थे। घर में प्रवेश करते ही माँ की फोटो के सामने नतमस्तक दोनों की अश्रुधार बह निकली।

मेघना बुदबुदा रही थी "देखो न माँ आज मैं वकील बन गई हूँ और मेघ भैया प्रशासनिक अधिकारी। आज तुम होतीं तो कितना खुश होती।"

"माँ हमें मालूम है तुमने बहुत कष्ट सहे। तुम्हें इस घर में हमेशा प्रताड़ित किया गया। तुम जिस मान-सम्मान की हकदार थीं वह तुम्हें कभी नहीं मिला।" कहते हुए मेघ का गला रुंध गया। सुधीर जो दूर खड़े यह सब देख, सुन रहे थे, नजदीक आए और दोनों बच्चों को गले से लगा कर भावुक स्वर में बोले- "तुमने ठीक कहा, सबको पता है वह बीमारी से मर गई, लेकिन मुझे पता है वह सम्मान की भूखी, सास-ससुर की प्रताड़ना से तिल-मिल कर अंदर से गलती रही और ऐसी बीमार पड़ी कि दोबार नहीं उठी। इसका जिम्मेदार तुम्हारा पापा है।" नहीं पापा, आप जिम्मेदार नहीं हैं- मेघना ने टोका।

"बच्चो, मैं चाहता तो तुम्हारी माँ को प्रताड़ना से बचा सकता था, लेकिन अपने अहं में अंधा हो गया था। मुझे उसका तिल-तिल कर मरना भी नज़र नहीं आ रहा था। उसकी मौत का जिम्मेदार मैं ही हूँ।" बिना साँस लिए सुधीर बोले चला जा रहा था। सामने दीवार पर लगी माँ की फोटो पर सजी फूल माला से एक फूल मेघना के हाथ में आ कर गिरा तो वह बोल उठी- "पापा देखो न माँ ने आज आप को दिल से माफ कर दिया।"

तीनों नम आँखों से नतमस्तक खड़े थे।

लॉकडाउन

''अरे जब से यह अजीब वायरस दुनिया में आया है, हर तरफ इसी का खौफ फैला हुआ है।'' निर्मल घर वालों को जोर-जोर से खबर पढ़ कर सुना रहा था। ड्रॉइंग रूम में माता-पिता और दोनो बच्चे नाश्ता कर रहे थे और उसकी पत्नी लेखा रसोई घर में व्यस्त थी।

''और तो और इस वायरस का नाम भी देखो कितना अजीब है कोरोना वायरस या कोविड-19। नाम से नहीं लगता कि यह इतना खतरनाक वायरस है जो अभी तक हजारों बेगुनाहों की जान ले चुका है'' निर्मल की तदबीर में लेखा की आवाज ही दब गई थी, जो बिचारी रसोई घर से पति देव को पुकार रही थी।

उसके ऊपर बच्चों ने जोर से टी.वी. चला रखा था। हर चैनल पर इस वायरस की ही तानाशाही चल रही थी।

अचानक समाचार से पता चला कि पूरे देश में प्रधानमंत्री जी ने लॉकडाउन घोषित कर दिया है। सब दफ्तर, दुकानें, व्यापार, स्कूल, कॉलेज, बन्द रहेंगे। ''अरे यह क्या कहर मचा दिया इस बीमारी ने। एक महीना लॉकडाउन में कैसे बैठेंगे घर के अन्दर'' खबर की प्रतिक्रिया से परेशान निर्मल लगभग चीखा।

रसोई घर में बर्तन धोती लेखा सोच रही थी यह एक महीने के लॉकडाउन से इतना परेशान क्यों हो रहे हैं। मेरी ज़िन्दगी तो बचपन से आज तक मायके में पिताजी की आँखों के लॉकडाउन और सुसराल में सास और पति के आदेशों के लॉकडाउन में ही गुज़री है और शायद यह लॉकडाउन जीवन-पर्यन्त रहेगा।

अपने

अखबार की सुर्खियों पर नजर पड़ते ही मोहिनी का दिल कांप उठा। वह चाय का कप् छोड़ झटके से उठ खड़ी हुई। ''अरे अभी तो आई हो, ऐसा क्या पढ़ लिया कि चाय भी छोड़ दी'' मोहिनी का हाथ पकड़ते हुए उसकी सहेली प्रभा ने हैरानी से कहा।

''प्रभा आग लगी है ज़माने को, खबर पढ़ो, एक मामा ने अपनी ही भांजी का बलात्कार करके उसका गला घोंट दिया। अब तुम किस पर विश्वास कर सकती हो।''

घबराई हुई प्रभा बोली ''मैं रोमी को घर में अकेला छोड़ कर आई हूँ।''

अरे अकेला कहाँ, तुमने तो कहा था तुम्हारे आगरा वाले नन्दोई घर पर हैं, रोमी अपने ही घर में अपने लोगों के साथ है तो फिर कैसा डर'' प्रभा ने एक ही साँस में अपनी सहेली मोहिनी को तसल्ली देते हुए कहा।

मोहिनी अपना बैग उठाते हुए बोली-आजकल अपना क्या और पराया क्या। अपने ही तो आजकल विश्वास की आड़ में ऐसे कु-कृत्य करते हैं कि जिन पर विश्वास करना भी मुश्किल होता है। रोज ऐसी खबरें पढ़ती हूँ फिर भी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है मेरी जो मैं रोमी को उसके अंकल के साथ घर पर अकेला छोड़ आई। वह नन्ही जान तो अच्छा-बुरा कुछ जानती भी नहीं।

अगले ही क्षण मोहिनी गाड़ी लेकर निकल गई और प्रभा मन ही मन सोच रही थी कि अब 'अपने' शब्द की परिभाषा में कौन-कौन आएगा, जिन पर विश्वास किया जा सके।

देश निकाला

डॉ. सोमनाथ रैना के नए घर में आज बहुत हलचल है। मेहमान बुलाए गए थे गृह प्रवेश की खुशी में शामिल होने के लिए किन्तु पता न था कि खुशी का माहौल दुख और रुदन में बदल जाएगा।

डॉ. रैना ने सेवानिवृत्ति में प्राप्त पूरी धनराशि नए मकान को बनाने में लगा दी कि आगे का जीवन वह और उनकी पत्नी आराम से गुज़ार सकें। किन्तु ईश्वर को मंजूर नहीं था। सवेरे घर प्रवेश की तैयारी के दौरान उन्हें सूचना मिली कि आंतकवादियों ने उसी रात में सबको वतन छोड़ने की चेतावनी दे दी है।

वह तो गृह प्रवेश के ख्वाब बुन रहे थे और यहाँ तो उनका देश निकाला ही तय हो गया। इस सूचना के मिलते ही वह अपना आपा खो बैठे। ''अरी मोहना तुमने सुना सब कह रहे हैं हमें आज ही कश्मीर छोड़ कर भागना पड़ेगा'' कहते कहते डॉ. सोमनाथ सिसकियाँ लेने लगे।

''आप फिक्र न करें'' मोहना ने डॉ. साहब को अपनी बाहों में संभालते हुए कहा। ''मोहना मैं कहीं नहीं जाऊँगा, यही रहूँगा'' यही बुदबुदाते हुए डॉ. रैना को दिल का दौरा पड़ा और उन्होंने प्राण छोड़ दिए।

इंतज़ार

उन दोनों का प्यार ज़माने से अलग ही था। वह जब भी उसके पेट में लात मारता, वह दर्द में भी मुस्काती बिना कोई शिकायत किए।

वह उसकी लातें खा कर खुश होती रही और उस समय का इंतज़ार करती रही, जब उसने अपने बच्चे को पहली बार देखा और अपनी बाहों में भर लिया।

नई पहचान

सीता आज दर्पण के आगे खड़ी खुद को पहचानने की कोशिश कर रही है। बालों में आई चाँदी, आँखों के आस-पास काले घेरे और गर्दन की झुर्रियाँ, शायद उसकी पहचान को मिटाने की कोशिश में लगे हैं।

चालीस वर्षों की दौड़-धूप और व्यस्तता में उसे पता ही नहीं चला कि कब उसका यौवन पंख लगा कर उड़ गया। सीता ने बालों को संवारा और गर्दन की झुर्रियों को साड़ी के पल्लू में छिपा लिया, लेकिन वह हैरान थी कि घर के लोगों की पहचान बनाने में, वह अपनी पहचान भूल ही गई।

अचानक, दरवाज़े पर हुई दस्तक से वह चौंक पड़ी ''दादी-दादी कहाँ हो। आज छुट्टी है। हम मम्मी के हाथ का पराठा नहीं खाएंगे। हमें पिज्जा बना कर खिलाओ।''

पोता-पोती को प्यार करते हुए सीता अपने साथ ही मुस्कुराई, शायद यह सोच कर कि उसकी नई पहचान तो अब ये बच्चे ही हैं।

घर वापसी

''अरे मिसेज़ धर, हमने सुना है कि सरकार ने कश्मीर से आर्टिकल 370 को समाप्त कर दिया है'' आरती गुप्ता ने अपने ज्ञान का परिचय देते हुए कहा।

''जी हाँ, हमने भी कल अखबार में पढ़ा है'' गिरिजा धर ने अपनी पड़ोसन से मुखातिब हो कर कहा।

''फिर तो आपकी मौज हो गई, अपने घर वापस जाइये और दिल में दबे अरमान पूरे कीजिए। सरकार तो बहुत फेवर कर रही है आप लोगों का'' उचकते हुए आरती ने सुनी-सुनाई बातों को दोहरा दिया।

''हाँ क्यों नहीं'' गिरिजा कहते हुए सोच रही थी कि तीस साल पहले वह बेघर हो कर खाली हाथ दिल्ली आई थी। मेहनत करके पति-पत्नी ने दोबारा घर-गृहस्थी जमाई और सुई से लेकर जहाज़ तक अपने दम पर बनाया।

''अरे मैडम, अभी से वादी के सपने देखने लगीं। आरती की आवाज़ सुन गिरिजा ख्यालों से बाहर आई और निर्णयात्मक अंदाज़ में बोली, ''एक बार जवानी में बेघर हुए थे, अब बुढ़ापे में फिर से बेघर होना, आसान है क्या'' अब आरती निरुत्तर थी।

सफलता

मैं अपनी नानी को बहुत मान देती थी क्योंकि वे अत्यधिक ज्ञानवान थीं।

एक दिन मैंने उनसे पूछा "जीवन की सफलता क्या होती हैं।" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

"जब तुम अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे लम्हों को ज़ेहन में लाओगी तो समझना कि यही तुम्हारे जीवन की वास्तविक सफलता है।"

माँ

माँ का आखिरी वक्त था। मेरा और मेरी बहन का परिवार उनके पलंग के आस-पास खड़ा था। आखिरी वक्त में उसके कहे शब्द मुझे अच्छी तरह याद हैं। उसने दर्दभरी मगर प्यार से लबालब भरी आवाज़ में कहा, ''बच्चो, मुझे आज सबके साथ बहुत अच्छा लग रहा है। हमें इसी तरह अकसर मिलना चाहिए था। काश कि मैं तुम सबको कुछ और प्यार दे पाती।''

मैं उनका हाथ थामे, उन्हें तसल्ली देती रही, ''माँ तुम पहले स्वस्थ हो जाओ, फिर अपना प्यार सब पर दिल खोल कर बरसाना।''

''बेटा'', ''हाँ, माँ'', ''तुम सबको मेरा बहुत प्यार और आशीर्वाद, बच्चों को खूब प्यार देना'' कहते हुए माँ ने अपनी आखरी साँस ली और जाते-जाते भी उदास हवाओं में प्यार की खुशबू फैला गई।

देश का भविष्य

उन दिनों मैं परिवहन भवन में सरकारी सेवा में कार्यरत थी और फरीदाबाद से संसद मार्ग, मेरा आना-जाना नियमित था। 'रिजर्व बैंक' के बाहर मैं रोज़ एक भिखारिन को बैठे देखती थी। उसकी गोद में पाँच-छह माह का बच्चा भी होता था। वह गर्मी और सर्दी के थपेड़ों को सह कर बिलखता रहता था। एक दिन मुझसे रहा न गया और मैं उससे पूछ बैठी, ''अरे तुम इस दूधमुंहे बच्चे को जून की इतनी गर्मी में लेकर यहाँ बैठती हो और यह बिचारा बिलखता रहता है, तुम कैसी माँ हो।''

''जी मेम साहब क्या करूं। इसका रोना देख कर लोग कुछ ज़्यादा भीख दे जाते हैं और दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो जाता है'' घबराते हुए उसने कहा।

अगले पल मैं चुप थी और सोच रही थी कि संसद भवन तो पूरे देश की तकदीर का फैसला लिखता है, लेकिन इसी संसद मार्ग पर एक भिखारिन की गोद में देश का भविष्य भूखा-प्यासा बिलखता रहता है।

कशिश

पिता जी के दिवंगत होने के पश्चात् मैंने भावुक मन से रोते हुए उनके माथे को प्यार से चूमा। उसके कुछ क्षण पश्चात् मुझे यह एहसास हुआ कि यह शायद मेरा पहला चुंबन था जो मैंने पिता जी को अपने बाल्यकाल के बाद पहली बार किया था।

उस दिन मैं खून की कशिश को ठीक से समझ पाई थी।

दरियादिल

मैं अपनी एक मित्र के साथ राजस्थान की यात्रा पर थी और उस यात्रा के दौरान मुझे एक बहुत गरीब रिफ्यूजी दिखा।

''मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है और अब मेरी हिम्मत भी जवाब दे रही है।'' वह कमज़ोर रिफ्यूजी, हमारे पास आकर बुदबुदाया।

''यह खा लो'' मेरी मित्र ने अपने बैग से सैंडविच निकाल कर उस रिफ्यूजी की तरफ बढ़ाया।

''हम इसको आधा-आधा खा सकते हैं।'' उस तीन दिन के भूखे रिफ्यूजी ने धीमे स्वर में कहा।

इस हालात में भी, मैं उसकी दरियादिली देख कर हैरान और अभिभूत थी।

अपनी-अपनी खुशी

कुछ समय से 'कोरोना' की घटनाएँ, शहर में काफी कम हो गईं और इसलिए सभी बहुत खुश हैं कि अब वे अपने-अपने स्कूल, कॉलेज और कार्यालय जा सकेंगे।

आज वह लड़की भी बहुत खुश है कि एक लम्बे ग्रीष्म अवकाश के बाद आज से स्कूल खुल रहे हैं और वह ट्रैफिक सिग्नल पर खड़े होकर पेन-पेन्सिल फिर से बेच पाएगी।

आखिर, उसे अपने छोटे भाई-बहन के लिए दो वक्त की रोटी का इंतज़ाम जो करना है।

रिश्वत

आज पी पी क्यू एस के कार्यालय में सीबीआई की रेड़ पड़ी है और सुबह से दफ्तर में हर तरफ यहीं बात हो रही है कि लेखा अधिकारी शर्मा जी को हिरासत में ले लिया गया है।

''सुना है सिर्फ पचास हज़ार की रिश्वत का मामला है, लेकिन शर्मा जी रंगे-हाथों पकड़े गए हैं इसलिए सस्पेंशन तो होगी ही, साथ ही जेल भी जाना पड़ेगा।'' अपनी अपडेट जानकारी का प्रदर्शन करते हुए गुप्ता जी बोल रहे थे।

''यारो एक नई खबर और मिली है'' रावत जी ने कमरे में घुसते हुए कहा। ''क्या खबर है'' सब लगभग एक साथ चीखे।

''शर्मा जी को पुलिस लॉकअप में रखा है लेकिन, घर से उसे मिलने कोई नहीं आया, सुना है पत्नी और बच्चों ने कह दिया है कि हमारा मुजरिम से कोई वास्ता नहीं है। इसकी वजह से समाज में हमारा मुँह काला हो गया है।'', पान चबाते हुए रावत जी ने सूचना दी।

अब शर्मा जी के परम मित्र सुशील के बोलने की बारी थी जो सब कुछ चुपचाप सुन रहा था। ''मैं तो शर्मा जी को दिन-रात यही समझाता था कि परिवार वालों की फरमाइशें पूरी करने के लिए, कभी कोई गलत काम मत करना, लेकिन वह बेवकूफ बीवी की बात टाल ही नहीं पाता था। आज इसी मोह के चक्कर में पड़ कर नौकरी से गया, इज्ज़त भी गई और जिनकी उचित अनुचित माँगें पूरी करने के लिए यह सब किया उनकी उपेक्षा का शिकार भी हो गया।''

बाहर से आता चाय वाला रामू अपनी मस्ती में गुनगुना रहा था ''उतने पाँव पसारिए, जितनी लम्बी चादर'' और फिर कमरे में सन्नाटा पसर गया था।

बेटी

मैं पहले एक बेटे की माँ बनी और कुछ वर्षों बाद एक बेटी की माँ बनी।

आज पचास वर्ष की उम्र में मुझे फिर से एक बेटी की माँ बनने का सौभाग्य मिला है।

मेरा बेटा आज विवाह करके अपनी दुल्हन को घर लाया है।

संबंध

जब मेरी सहेली दिव्या ने एक प्यारी-सी बच्ची को जन्म दिया और मैं उससे मिलने अस्पताल गई, तो उसकी आँखों में आँसू देख कर, मैं हैरान हो गई।

''क्या हुआ दिव्या, तुम रो क्यों रही हो'' मैंने घबरा कर पूछा तो वह दबे लफ्जों में बोली-

''कुछ नही, सोच रही हूँ इस बेबी ने मेरा करियर खराब कर दिया। यह गलत समय पर आ गई, जब मेरा प्रमोशन ड्यू था। तुम तो जानती हो, इस प्रमोशन के लिए मैंने कितनी मेहनत की थी।''

इससे पहले कि मैं दिव्या को कुछ समझा पाती, उस छोटी परी ने माँ की ऊंगली को कस कर थाम लिया और वह उसी क्षण सब कुछ भूल गई।

मैं अपने साथ ही मुस्कुराई यह सोच कर कि आज एक बेटी के साथ-साथ एक माँ का भी जन्म हुआ है।

औकात

जब कभी मीरा अपने भाई के घर आती, किसी न किसी बहाने उन्हें छोटा दिखाने की फिराक में रहती।

''अरे भाभी तुम्हारी पसंद अजीब है। यह ऐसी साड़ी कहाँ से खरीदी है। कहीं पटरी-वटरी से ली हुई लगती है।'' मीरा अक्सर ऐसे ही तंज कसा करती।

''लेकिन बहना, तुम्हारे भाई की जितनी आमदनी है, मुझे उसी औकात में रहना पड़ेगा न'' भाभी समझाते हुए मीरा की बात को टाल दिया करतीं।

आज मीरा चुप थी और भाई-भाभी के सामने आँसू बहा रही थी।''अरे मीरा, रो मत तुम्हारा भाई अभी जिन्दा है। जीजाजी को आज बिज़नेस में नुकसान हुआ है तो समय के साथ कल सब ठीक हो जाएगा। यह लो कुछ रुपये और बच्चों के स्कूल की फीस समय से भर देना।'' कहते हुए भाभी ने मीरा के आँसू पौंछे।

''भाभी मुझे माफ कर दो, मैंने अपनी दौलत के घमंड में आप लोगों को कई बार छोटा दिखा कर, दुख पहुँचाया है'' बिलखते हुए मीरा अपनी भाभी के गले लग गई।

दोस्ती

आर्थिक स्थिति में बहुत फर्क होते हुए भी कर्ण और राम गहरे दोस्त थे। कर्ण के पिता जी सरकार में क्लास वन अधिकारी थे और राम के पिता जी किसी निजी कार्यालय में दफ्तरी।

दोनों स्कूल और कॉलेज में साथ ही पढ़े थे। दोनों बहुत होनहार थे लेकिन, मंदी के समय में बेरोजगारी का दंश झेल रहे थे।

किसी नौकरी के इंटरव्यू के लिए भी दोनों दोस्त साथ ही गए। वहाँ इंटरव्यू में पहले कर्ण को बुलाया गया और फिर राम को और घंटे भर बाद ही फैसला भी आ गया कि राम को प्रबंधक के पद के लिए उपयुक्त माना गया है।

''राम बहुत-बहुत बधाई मेरे यार'' कर्ण की आँखों में खुशी के आँसू थे। ''लेकिन तुम्हारा बायोडाटा तो मेरे बायोडाटा से भी अच्छा है तो फिर यह कैसे'' राम ने पूछा।

''अरे मेरे भाई मुझे कई प्रश्नों के जवाब ही नहीं आते थे और वैसे भी मुझसे ज्यादा इस नौकरी की जरूरत तुम्हें है।'' राम ने मुस्कुराते हुए कहा।

अब राम की आँखें भरी हुई थीं और वह समझ गया था कि कर्ण ने इंटरव्यू में प्रश्नों के जवाब क्यों नहीं दिए।

सुन्दरता

रूप-रंग से सांवली और साधारण दिखने वाली शकुंतला ने कुछ ही दिनों में अपने ससुराल वालों का हृदय जीत लिया था।

''अरे तुम्हारी बहू तो बिलकुल सुन्दर नहीं'' शकुंतला की सास की सहेली ने शब्द उछाले लेकिन, शकुंतला ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई, अपितु उसके पांव छूकर चाय-पानी की तैयारी में जुट गई।

शकुंतला की सास से रहा न गया- ''कैसी बातें करती हो तुम, सुन्दरता केवल रूप-रंग से नहीं होती। असली सुन्दरता तो शकुंतला के व्यवहार और आचार से झलकती है। ऐसी सात्विक और निर्मल सुन्दरता तो आजकल दुर्लभ हो गई है।''

सहेली अब चुप थी और सहमति में अपनी गर्दन हिला रही थी।

अपना-घर

गीता को वृद्धाश्रम आए महीनाभर हो चुका था। अब वह धीरे-धीरे इस माहौल में रमने लगी थी। सुबह सवेरे पूजा-पाठ, फिर व्यायाम और नाश्ते के बाद वहां बनी सहेलियों से बात-चीत उसकी रोज़ की दिनचर्या थी। बेटा-बहू, जिस दिन उसे वृद्धाश्रम छोड़ने आए थे, उस दिन वह बहुत रोई थी लेकिन, उन पर कोई असर नहीं हुआ था। जाते हुए वे दोनों वहां के संचालक को अच्छे पैसे और आश्वासन दे गए थे ताकि माँ को वहां कोई तकलीफ न हो।

महीनेभर बाद ही बेटा माँ को वापस लेने आया, शायद उसे अपनी गलती का पछतावा था। ''माँ अपना सामान बाँध लो, मैं तुम्हें लेने आया हूं'' बेटा हाथ जोड़े खड़ा था। ''कहां बेटा''

''माँ अपने घर' नहीं बेटा, अब तो मेरा मन यहाँ रम गया है। सभी मुझे प्यार और मान देते हैं। यहाँ किसी के पास दौलत नहीं है लेकिन सब अपना कीमती वक्त मुझे देते हैं''

''लेकिन माँ'' बेटे की बात को बीच में ही वास्ते हुए राधा बोली-''बेटा तुम अपने घर खुश रहो, मेरा घर अब यही आश्रम है। कभी-कभी मेहमान की तरह मिलने आ जाना''।

आज माँ की जगह बेटे की रुलाई निकल रही थी लेकिन, राधा अनदेखी कर के अपने कक्ष की ओर मुड़ गई थी।

किसका दोष

''यह आजकल की लड़कियां भी ऐसे कपड़े पहनती हैं कि सबकी नज़रें उन पर टिक जाती हैं और फिर कुछ गलत होता है तो सारा दोष लड़कों के सिर मंढ देती हैं।'' बहुत उत्तेजित स्वर में संगीता लगभग चिल्ला कर बोली तो पास खड़ी उसकी बेटी ने समाचार-पत्र की सुर्खियाँ उसके सामने रख दीं, जहाँ बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था- ''दो साल की बच्ची का अपने ही पड़ोसी ने बलात्कार किया और गला घोंट कर नाले में फेंक दिया।''

''माँ जरा बताना दो साल की बच्ची को कैसे कपड़े पहनने चाहिए।'' बेटी के कटाक्ष पर संगीता निरुत्तर सोच रही थी कि वास्तव में दोष लड़की के कपड़ों का नहीं बल्कि पुरुष की तुच्छ मानसिकता और हिंसक प्रवृत्ति का ही है। वह स्वयं की असंवेदनशीलता पर हैरान थी।

चित्रकार

जनक और राधा अच्छी सहेलियाँ होने के बावजूद हमेशा बहस में व्यस्त रहती हैं। बहस की वजह है ईश्वर का अस्तित्व।

जनक आस्तिक तो राधा पूरी तरह नास्तिक। आज जनक राधा के घर आई और उसकी मेज पर रखी ड्रॉइंग शीट देख कर बोली-''वाह! प्रकृति का अति मनोहारी चित्र''

''दोस्त, यह चित्र मैंने बनाया है'' उचक कर राधा ने कहा।

जनक ने शातिर मुस्कान भरते हुए कहा- ''इतना सुन्दर चित्र तुम नहीं बना सकती हो, यह तो स्वयं बन गया है।''

''अरे आज तुम भांग खा कर तो नहीं आई हो जो उल्टा-सीधा बोल रही हो। चित्र स्वयं कैसे बन जाएगा'' राधा थोड़ा उत्तेजित होकर बोली।

''बस यही तो मैं तुम्हें इतने दिनों से समझाने की कोशिश कर रही हूं कि जब यह छोटा-सा चित्र स्वयं नहीं बन सकता तो इतना बड़ा चित्र इतनी बड़ी दुनिया और इतनी सुन्दर वैवध्यपूर्ण प्रकृति बिना किसी चित्रकार के किस तरह संभव हो सकती है। जनक ने अपनी बात रखी, तो राधा ने भी हँस कर कहा- ''मान गई यार, आज मैं तुमसे हार गई।''

मानसिक विकलांगता

मेरे दफ्तर जाने के रास्ते पर प्राय: भीड़ रहती थी और बसें भी लदी-फदी ही मिलती थीं। मुझे याद है वह दिन जब बस में चढ़ते ही मुझे आगे की सीट, जो विकलांगों के लिए आरक्षित होती है, वहां बैठने की जगह मिल गई। मैं खुश थी क्योंकि मेरा छठा महीना चल रहा था और मुझे अपने भीतर पल रही नन्ही सी जान की बहुत फिक्र रहती थी।

अगला स्टैंड आते ही एक वृद्ध अम्मा आगे के दरवाज़े से बस में चढ़ीं और मेरी सीट के पास आकर खड़ी हो गईं। ''बेटा मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता मुझे बैठने दो'' मेरे साथ बैठे हुए नवयुवक से अम्मा ने सीट माँगते हुए कहा।

''अम्मा यह लेडीज सीट नहीं है और न ही तुम विकलांग हो तो तुम्हें यह सीट क्यों दूं।'' बड़ी बेशर्मी से उस नवयुवक ने बोल कर गर्दन दूसरी तरफ कर ली। मुझसे देखा न गया और मैंने अम्मा के लिए सीट छोड़ दी।

''अरे-अरे मैडम आप बैठिए, मैं खड़ा हो जाता हूं।'' झेंपते हुए वह लड़का उठने को हुआ।

''भैया कृपया आप बैठे रहो, यह सीट सिर्फ विकलांगों के लिए नहीं है, मानसिक रूप से विकलांगों के लिए भी है''।

मेरी बात सुनकर उस लड़के ने मेरे उतरने तक, शर्म के मारे अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाईं।

रक्षाबन्धन

''अरे रेनू तुम यहाँ कैसे, आज तो रक्षाबन्धन है।'' दरवाज़े पर खड़ी रेनू को देख कर उसकी सहेली सीमा ने हैरानी से पूछा।

''हर साल जाती हूं, लेकिन इस साल नहीं जा रही भाई के घर, सोचा तुम्हारे साथ ही गप्पें मार लूं।'' रेनू ने सोफे पर बैठते हुए कहा।

''भाई-भाभी से कोई झगड़ा हुआ है क्या'' रेनू के नज़दीक बैठते हुए रीना ने पूछा।

''ओ मेरी प्यारी सहेली इतनी दूर जाने का कोई फायदा नहीं, सिर्फ घाटा ही है। राखी, मिठाई और मेट्रो का खर्चा मिलाकर छह सौ रुपये हो जाता है, ऊपर से थकावट अलग और वहां मिलते हैं केवल पाँच सौ रुपये यानी सौ रुपये का घाटा, अब तुम बताओ मैं सही कह रही हूं कि गलत।''

सीमा हैरान-सी भाई के स्नेह और रक्षाबन्धन में होने वाले नफा और नुकसान के समीकरण को समझने का प्रयास कर रही थी।

आदत

''अरे रामवती, नई बहू रानी को समझाया नहीं कि यहाँ सब लोग नमक कम और चीनी ज्यादा खाते हैं।'' सुभद्रा ने आदेशात्मक स्वर में अपनी आया से कहा।

''जी मालकिन, मैंने बहू रानी को कल ही सब समझा दिया था।''

''फिर आज नाश्ते में सब उल्टा क्यों था, चाय में चीनी कम थी और पराठे में नमक ज्यादा'' उत्तेजित सुभद्रा अभी बोल ही रही थी कि नई बहू ने कमरे में प्रवेश किया।

''माँ जी मैंने कल ही रामवती आंटी से सब जान लिया था लेकिन, माँ अट्ठाईस वर्ष से पड़ी आदतों को बदलने में मुझें भी कुछ समय लगेगा''।

बहू रानी के इस जवाब के आगे अब सुभद्रा बिल्कुल मौन थी।

एनजीओ

माँ और पिताजी के आकस्मिक निधन के पश्चात हम बच्चों ने उनका सारा सामान एक नामी-गिरामी एनजीओ में दान करने का फैसला किया। सबने सोचा कि अगर उनका सामान जरूरतमंदों के काम आएगा तो उनकी आत्मा को शांति मिलेगी।

नियत दिन और नियत समय पर एनजीओ का मालिक कुछ मजदूरों के साथ आया और इस आश्वासन पर सारा सामान ले गया कि यह सब जरूरतमंदों के घर पहुँचा दिया जाएगा। लेकिन, हुआ यह कि टैम्पू में भरे हुए सामान से खास-खास सामान सीधा एनजीओ के प्रधान के घर पहुँच गया। यह खबर मुझे विश्वसनीय सूत्रों से कुछ दिनों बाद पता चली।

दुपट्टा

''अच्छे घरों की लड़कियां दुपट्टा पहने रहती हैं और इसी से उनके चरित्र का आकलन भी होता है'' दिव्या की माँ ने बेटी पर जोर डालते हुए समझाया।

''लेकिन माँ दुपट्टे का आचरण से क्या लेना-देना। तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं'' दिव्या बोली।

माँ ने नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाते हुए दिव्या को कहा- ''हम जिस समाज में रहते हैं, हमें उसके नियम और कायदों को मानना पड़ता है''।

तभी अचानक दरवाज़े की घण्टी बजी और दरवाज़ा खुलते ही कुछ शोर-शराबे की आवाज आने लगी। देखा तो नीना के मम्मी और पापा कुछ लोगों के साथ दरवाज़े पर खड़े थे। ''अरे आँटी अन्दर तो आइये'' दिव्या ने आमंत्रण दिया।

''बेटा गजब हो गया नीना कल सुबह घर से निकली थी और कुछ लोगों ने उसे किसी लड़के के साथ जाते देखा है। लेकिन, वह अभी तक घर नहीं लौटी और न ही फोन उठा रही है''। आँसू बहाते हुए नीना की माँ ने कहा।

''लेकिन आँटी मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता क्योंकि परीक्षा के दिनों में मेरा ध्यान सिर्फ किताबों में रहता है।'' दिव्या एक ही साँस में अपनी बात कह गई।

''अरे बेटा तुम सयानी हो लेकिन नालायक नीना तो हमारे मुँह पर कालिख पोत कर चली गई।'' कहते हुए नीना के मम्मी पापा-दरवाज़े से वापस लौट गए।

अचानक दिव्या की नज़र माँ पर पड़ी जो शायद इसी ख्याल में गुम थी कि नीना को उसने हमेशा दुपट्टे में देखा और दिव्या को टोकती रही। लेकिन आज तो नीना का दुपट्टा भी उसे रोक नहीं पाया।

''तुम ठीक ही कह रही थी दिव्या कि दुपट्टे का आचरण से कोई लेना-देना नहीं है, यह तो सिर्फ अपनी समझ की बात है'' दिव्या की माँ ने कहा तो दिव्या की आँखें भर आईं।

ईश्वर की लाठी

पड़ोस में काफी दिनों बाद आज कुछ हलचल सुनाई दी। मैं भी मास्क लगा कर थोड़ा बाहर निकली तो पता चला कि गली के शर्मा दम्पति इस दुनिया में नहीं रहे। अस्पताल के आई.सी.यू. में कई दिनों से कोरोना महामारी से जूझते हुए आज सुबह उन दोनों ने अंतिम साँस ली। सुनकर बड़ा झटका लगा और मेरे मुँह से निकला ''हाय राम ! बहुत दुखद वे तो चले गए पर अब इन मासूम बच्चों का क्या होगा। अभी तो स्कूल की शिक्षा भी पूरी नहीं हुई। अब इनका ध्यान कौन रखेगा''।

किसी की आवाज आई ''अब तो ईश्वर ही मालिक है, वही ध्यान रखेगा। तभी, मालूम हुआ कि बच्चों की बुआ रोती बिलखती आई है और कह रही है कि बच्चों के दादा-दादी आ रहे हैं और अब वही इनका ध्यान रखेंगे।

क्योंकि मैं इस मोहल्ले में नई थी तो, पूछने पर श्रीमती गुप्ता ने बताया कि पहले यह सब एक साथ रहते थे लेकिन कुछ वर्ष पहले श्रीमती शर्मा के दबाव में आ कर शर्माजी अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम छोड़ आए। ''बहुत रोए थे वह जाने से एक दिन पहले और मुझे बोले थे बेटा हम अपने पोता-पोती के बिना वहाँ कैसे रहेंगे, तुम्ही समझाओ न इन्हें। उनकी छलकती आँखें देख मेरा हृदय छलनी हो गया था और लाचार मैं उन्हें झूठी तसल्ली ही देती रह गई।'' बहुत धीमी आवाज में श्रीमती गुप्ता कह रही थीं ।

मैं सोच रही थी कि दादा-दादी के रूप में ईश्वर ही बच्चों को संभालने आ रहे हैं। तभी किसी की अगली आवाज से मेरा ध्यान भंग हुआ'' उसकी लाठी में आवाज़ नहीं होती।''

प्यास

गाँव में जमींदार के कुएँ से पानी भरने की हिमाकत छोटी जात वाले नहीं कर सकते थे। उसके आस-पास से गुज़रने का मतलब ही हड्डी-पसली तुड़वाना था और ऐसी ही हिमाकत अनजाने में राजू चमार से हो गई।

ज़मीदार के चमचे उसको और उसकी नई ब्याहता को हवेली के आंगन में पकड़ लाए।

''माई-बाप, यहाँ से गुज़र रहा था और मेरी बीवी सावित्री को प्यास लगी। साहब वह पेट से है इसलिए मुझसे पानी लेने की भूल हो गई।'' काँपते, गिड़गिड़ाते हुए राजू कह रहा था।

''हरामज़ादा, पहले गलती करता है, उस पर ज़बान भी लड़ाता है।'' जमींदार के वफादार कुत्ते ने उसकी पीठ पर लात जमाते हुए कहा।

''साहब एका नाही मारो, हमरी खातिर इससे यह भूल होई गवा। मोको दण्ड देई दो पर एका नाही मारो'' सावित्री ज़मीन पर बैठी खुद को कोस रही थी।

''इसने तो कुएँ का पानी खराब कर ही दिया, इसका तो यही दण्ड है कि तुम मेरी प्यास बुझाओ और मैं तुम्हारी'' लगभग चीखते हुए जमींदार ने इशारा किया।

सावित्री को दो लोग घसीटते हुए जमींदार के कमरे में ले गए। उधर दरवाज़ा बन्द हुआ, इधर राजू की पिटाई शुरू हुई।

दोनों तरफ से उठती चीखें कुछ समय बाद ठण्डी हो गईं।

''अरे ससुरो, पिला दो दोनों को अपने कुएँ का पानी'' कमरे से निकलते हुए जमींदार मूछों पर ताव देता हुआ बोला।

अब ईनाम में दोनों को उसी कुएँ का ठण्डा पानी जबरदस्ती पिलाया जा रहा था।

अच्छा-इंसान

ज़ाहिदा ने आज अपने बेटे इरफान के लिए उसकी मनपसंद फिरनी बनाई है, उसकी सालगिरह जो है ''इरफान जल्दी आना, तुम्हारे लिए फिरनी बनाई है।'' ज़ाहिदा ने मुस्कुराते हुए कहा और काम में व्यस्त हो गई।

''जी अम्मी, बस दस मिनट में बैटिंग करके आ रहा हूँ।'' हाथ में बैट लिए इरफान बाहर खड़े दोस्तों के साथ मैदान में दौड़ गया।

अभी दो मिनट ही हुए थे कि अचानक एक ज़ोरदार धमाका हुआ और गोलियाँ चलने की आवाज आई। ज़ाहिदा घबरा कर बाहर निकली और बेटे को पुकारने लगी। तभी कुछ लोग खून से लथ-पथ इरफान को गोद में उठा कर लाए और उसकी अम्मी की गोद में दे दिया। ''इरफान, मेरे बेटे, यह क्या हो गया, आँखें खोलो बेटा'' रोती-चीखती ज़ाहिदा बार-बार बेटे का माथा चूम रही थी।

''माँ मैंने कुछ नहीं किया मैं तो बस खेल रहा था फिर उन्होंने मुझे क्यों मारा'' बुदबुदाते हुए जख्मी इरफान ने डॉक्टर के आने से पहले ही आँखें मूंद ली। ज़ाहिदा की चीख निकली और फिर सन्नाटा पसर गया।

''अरे मेरे मासूम बच्चे को किसने मारा, क्यों मारा'' यह कहते हुए ज़ाहिदा पछाड़ खा कर गिर गई। भीड़ के बीच से किसी की आवाज आई ''बेचारा क्रॉस फायरिंग का शिकार हो गया। पुलिस वालों को आंतकी लगा और आंतकवादियों की नज़र में वह मुखबिर था।''

''लेकिन मैं तो उसे सिर्फ एक अच्छा इंसान बनाना चाहती थी।'' सिसकियाँ भरती हुई फातिमा बुदबुदा रही थी।

चोरी का ईनाम

दफ्तर से आई मेघना की गोद में फलक छलांग लगाकर चढ़ गई और लाड़ में बोली- ''अम्मा इतनी देर क्यों कर दी?''

''बेटा आज दफ्तर में ज्यादा काम था। हां, तुमने खाना ठीक से खाया, फल खाया, दही खाया कि नहीं।'' बिटिया से लाड़ करती मेघना को पता भी न चला कि उसकी आया रोज़ी पांच मिनट से पानी का गिलास लेकर वहीं खड़ी थी।

पानी लेते हुए मेघना ने रोज़ी से पूछा-''फलक ने पूरा खाना खाया था कि नहीं।''

''जी नहीं मेम साहब, आधा ही खाया था।''

किचन में घुसकर मेघना की नजरें सामान की तफ्तीश करने लगीं। ''यह क्यों गंदा है। यह यहाँ क्यों रखा है? इसे अपनी जगह रखो।'' आदि-आदि।

अचानक मेघना की नजर अलमारी में रखे बिस्कुट के जार की तरफ गई। अधखुला ढक्कन देखकर मेघना ने शंकित होकर जार खोलकर देखा-''अरे! कल ही तो मैंने इसमें बिस्कुट रखे थे, ये आधे कैसे रह गए?'' मेघना ने रोज़ी को घूरते हुए पूछा।

''जी, मुझे नहीं मालूम।'' कांपते स्वर में रोज़ी ने कहा।

''एक तो चोरी करती हो, उस पर झूठ भी बोलती हो।'' आग बरसाते हुए मेघना ने रोजी के गाल पर जोर का तमाचा जड़ दिया। हतप्रभ रोज़ी दर्द और भय से रोने लगी।

रोने की आवाज सुनकर फलक दौड़ती हुई किचन में आई और मचलकर बोली- ''माँ आज मैंने चोरी की है। मैंने बहुत सारे बिस्कुट खाये हैं।''

''अरे, मेरा बच्चा, आज मैं बहुत खुश हूँ। चलो रोटी नहीं खाई, तो कुछ तो खाया। आज मैं तुम्हें इस चोरी का ईनाम दूंगी।'' मेघना ने ममता भरे सुर में कहा।

''माँ, मुझे ईनाम में क्या मिलेगा।''

''पापा को आने दो, आज तुम्हें 'मेक डॉनाल्ड' ले जाएंगे और तुम्हें तुम्हारी पसंद का बर्गर और आइसक्रीम खिलाएंगे।''

मेघना ने फलक का गाल चूमते हुए कहा-''ऐसी चोरी तुम रोज किया करो।''

कोने में आँसू बहाती हुई रोज़ी सोच रही थी, कि क्या चोरी का ईनाम इंसान के साथ बदल जाता है।

कर्त्तव्य

सूती माँड लगी गुलाबी साड़ी में अलका आज बहुत जंच रही है। जंचे क्यों नहीं, आज तो वह बतौर मुख्य अतिथि के रूप में बाल सदन के कार्यक्रम में आमंत्रित है।

पतिदेव दौरे पर बाहर गए हैं इसलिए बुखार में तप रहे मासूम रोहन को वह पड़ोसन के हवाले करके गाड़ी में निकलने लगी है। रोहन गर्म है, बेचैन है- ''माँ आज मेरे पास ही रहो, मुझे डर लग रहा है।''

''ओ बेटा तुम तो बहादुर हो, चलो मेरा हाथ छोड़ो और सो जाओ, मैं जल्दी आ जाऊँगी।'' कहती हुई अलका बिलखते, तपते रोहन को पड़ोसन के पास छोड़ गई।

''ड्राइवर जल्दी चलो, देर हो रही है'' अलका गाड़ी में बैठते हुए बोली। बाल सदन में हुए स्वागतसत्कार से अभिभूत अलका, मंच पर संबोधन के लिए पहुँची ''प्यारे बच्चो और प्यारी बहनो'' माँ का पहला कर्त्तव्य बच्चे की अच्छी परवरिश पर ध्यान देना होता है। बहनो कितना भी ज़रूरी काम क्यों न हो, बच्चे की सेहत सर्वोपरि है। बच्चा कोमल फूल-सा होता है और स्नेह की गर्मी के अभाव में मुरझा जाता है।'' अलका बड़ी शिद्दत से अपने व्याख्यान में लगी हुई है और लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट में उसे न तो फोन की घण्टी ही सुनाई दे रही है और न ही एस.एम.एस.।

चार घण्टे से ऊपर हो चुके हैं और रोहन का ताप बढ़ता जा रहा है, वह अचेत-सा 'माँ-माँ' पुकार रहा है।'' पड़ोसन फोन लगा लगाकर थक चुकी है और खुद ही रोहन को अस्पताल में दाखिल कर आई है।

देर शाम हो गई और उसकी अनुपस्थिति में रोहन की हालत और बिगड़ गई। अलका को खबर मिल गई है और वह अस्पताल पहुँच गई है, जहाँ रोहन को ऑक्सीजन पर रखा है।

'संध्या टाइम्स' भी अस्पताल पहुँच गया है। सुर्खियां हैं- ''विदूषी अलका जी ने आज बाल सदन के कार्यक्रम में बाल विकास से संबंधित चर्चा में अपने संवेदनशील संबोधन और विचारों से हर माँ को अपनी जिम्मेदारी का एहसास करा दिया है।''

रिपोर्ट

''मधु आज का एजेंडा बताओ हम सबने कहाँ जाना है।'' मीता ने अपनी डायरी के पन्ने पलटते हुए कहा। दीदी-- आज तो वृद्धाश्रम जाने का तय हुआ था।

''तो ठीक है रजनी और सुप्रिया को भी बुला लो और समाचार-पत्र के लिए रिपोर्ट भी तैयार कर ही लो'' मीता ने चाय की चुस्की लेते हुए फरमान दिया।

कुछ ही देर में ड्राइवर आया और उनकी टीम पास के वृद्धाश्रम की ओर निकल पड़ी। मधु और उसकी टीम के सत्कार के लिए कुछ लोग वृद्धाश्रम के गेट पर पहले से ही थे। मीडिया के कुछ चेहरे भी नजर आ रहे थे।

मधु ने अंदर जाकर जायजा लिया। कई वृद्ध महिलाओं से बातचीत की। उनके साथ बैठकर चाय भी पी और उनको सांत्वना देकर उनका दिल भी बहलाया।

''न जाने आज की पीढ़ी को क्या हो गया है, जो अपने बुजुर्गों का बिलकुल ध्यान नहीं रखती। खैर, अगली बार हम कुछ कपड़े और कमज़ोर आँखों के लिए चश्मे लेकर आएंगे।''

''बहुत-बहुत शुक्रिया मैडम'' वृद्धाश्रम का प्रबंधक हाथ जोड़े खड़ा था। मीता अपनी टीम के साथ वापस लौट आई। घर घुसी ही थी कि माता जी का स्वर सुनाई दिया ''मधु बेटा तुम आ गईं तुमने मुझे पिछली बार आँख के डॉक्टर के पास ले जाने का वादा किया था।''

''अरे माँ जी आप तो मेरे आते ही शुरू हो जाती हो। थक कर आई हूँ, साँस तो लेने दो।'' एक तीखे स्वर में मीता ने जवाब दिया।

माँ सहमकर बोली- ''बेटा दोनों आँखें बन आई हैं, दिक्कत होती है ऑप्रेशन करा दो।''

''माँ जी आपको कोई काम तो है नहीं, बैठे-बैठे हुक्म चलाने की आदत हो गई है। मुझे तो हजारों काम हैं और फिर आपको फर्क ही क्या पड़ता है। काम तो आप वैसे भी नहीं कर पाती हैं। ऑपरेशन पर पैसे क्यों बर्बाद करने हैं। जिन्दगी के कुछ दिन हैं। ईश्वर का नाम लेकर गुजार दो।'' झुंझलाते हुए मीता बोली और प्रेस में जाने वाली कार्यक्रम की रिपोर्ट को अंतिम शक्ल देने के लिए अपने कमरे में चली गई।

डायरी के पन्ने

''सुधा जरा दुल्हन का जोड़ा तो दिखाओ।''

''बुआ जी अभी लाई।''

''माँ मेरा मेहन्दी वाला सूट कहाँ रखा है?''

''बेटा अभी देती हूँ।''

''बीबीजी यह सारे मसाले कहाँ रखवाऊँ?'' महाराज जी अभी मैं स्टोर का ताला खोल देती हूँ, वहीं रखवाने हैं।

निर्जीव यंत्र-सी सुधा हर किसी की आवाज पर दौड़े जा रही है। आज उसकी बेटी की मेहंदी की रस्म जो है।

कभी बच्चे की फरमाइश पूरी करती, कभी माँ बाऊजी के निर्देशों को ध्यान से सुनती, कभी पति देव की हिदायतों पर गौर फरमाती सुधा बस तन्मयता से पत्नी, माँ, पुत्री होने का फर्ज निभा रही है।

हर तरफ सुधा-सुधा हो रहा है, लेकिन सुधा को अपनी कोई सुध नहीं है। बेटी की मेज को ठीक करते-करते सुधा की नजर डायरी के पन्ने पर गई है जिस पर कई वर्ष पहले उसने कविता लिखी थी।

सुधा एक क्षण ठहर गई है। बैठकर कविता पढ़ रही है, उसके तपते हृदय पर जैसे शीतल जल का प्रवाह होने लगा है और वह कुछ क्षण के लिए निर्जीव यंत्र से वापस हाड़-माँस का इंसान बन गई है।

बाहर शोर बढ़ रहा है। कई आवाजें सुधा को पुकार रही हैं, लेकिन यह क्षण सुधा का अपना है। बाहर के शोर से बेखबर-सी सुधा ने कविता को दो बार पढ़ा और सारा रोष, थकावट, दुख और दर्द उसकी आँखों से बह निकला है।

अब उसकी निर्जीव देह में पुनः जीवन का संचार हो गया है। ''सुधा-सुधा कहाँ हो, जल्दी आओ''- माँ की आवाज पर सुधा द्रुत गति से उठी- ''माँ आई थोड़ा थक गई थी, विश्राम कर रही थी।'' अब सब ठीक है, चलो मेहन्दी की तैयारी करते हैं। कहते हुए सुधा फिर बाहरी शोर में गुम हो गई है।

स्वार्थ

सजिता और रोहन की गृहस्थी, उन दोनों की व्यस्तता के बावजूद सही चल रही है और इसका श्रेय जाता है उनकी आया प्रभा को। प्रभा उनके घर दो वर्ष से काम कर रही है।

सजिता उसकी तारीफ में पुल बांधा करती "पहली बार एजेंसी वालों ने मुझे लायक और तमीज वाली आया दी है।" और रोहन कहता- "अब तुम्हारी अपनी ही नजर लग जाएगी।" बच्चे भी प्रभा से बहुत प्यार करते और वह उनकी हर जरूरत का पूरा ध्यान रखती।

कुछ समय से प्रभा की माँ बीमार चल रही है और उसके पिताजी का फोन कई बार आ गया लेकिन अपनी-अपनी व्यस्तता में उसे घर भेजना असंभव सा लगा।

आज अचानक गाँव से उसका फोन फिर आया "हैलो- मैं प्रभा का बाबा बोले हूँ। प्रभा को घर भिजवाय दो।" "भेज दूंगी आप फिक्र नहीं करें।" मैंने छोटा-सा जवाब दिया। "प्रभा से बात करा दो" वह बोले। मैंने प्रभा को बुलाया और बात करवाई। अचानक ही बात करते-करते प्रभा के हाथ से रीसीवर छूट गया और वह जोर-जोर से रोने लगी। मैं समझ गई कुछ बुरा घटा है। "प्रभा क्या हुआ, माँ तो ठीक है न।"

"मेम साहब, माँ अब नहीं रहीं" कहकर प्रभा फिर दहाड़े मारकर रोने लगी। मेरा मन तड़प उठा। "माँ मेरा नाम लेते हुए गई हैं और मैं आखिरी वक्त उनका मुँह भी नहीं देख पाई। कितनी अभागी हूँ मैं।" प्रभा बिलखते हुए बोली।

मैंने प्रभा को गले से लगाया। उसे बिठाकर पानी पिलाया और प्यार से जीवन-दर्शन समझाया। मैं इस खबर से बहुत दुखी थी और ज्यादा दुखी थी, मैं यह सोचकर कि प्रभा के जाने के बाद घर कैसे संभलेगा। तभी बेटा बाहर से घूमता हुआ आया और सारी बात जानकर बोला ''माँ तुम बहुत स्वार्थी हो, अपनी गरज से तुमने इसको बीमार माँ से मिलने नहीं दिया।''

''नहीं बेटा धीरे बोलो, प्रभा सुन लेगी, मुझे क्या मालूम था कि वह अचानक ही दम तोड़ देगी।'' यह कहकर मैंने खुद को तसल्ली देनी चाही पर शायद मन में कहीं चोर था।

पूरी रात मुझे नींद नहीं आई और मैं इसी उधेड-बुन में रही कि क्या मैंने स्वार्थ की खातिर यह पाप जान बूझकर तो नहीं किया ?

सलाह

राधा को घर, बहु लाए अभी महीनाभर ही हुआ था कि आँखों में आँसू लिए वह अपनी सहेली के पास दिल हलका करने चली आई थी।

''अरुण मेरा कितना ध्यान रखता था। हर समय मेरे आगे-पीछे रहता था। मेरे हाथ से खाता और मेरी गोदी में ही सिर रखकर सो जाता था।'' राधा अपने दिल का दर्द बयान कर रही थी ''जब से घर में बहू आई है, मेरे पास आने का अब उसे वक्त ही नहीं होता'' कहते-कहते राधा की अश्रुधारा बह निकली।

मीना जो बहुत देर से यह सुन रही थीं, राधा के पास आकर बोलीं ''देखो राधा तुम्हारा बेटा किसी की बेटी ब्याह कर लाया है। दोनों व्यस्त हैं किन्तु सुबह-शाम तो तुम्हारी आँखों के सामने होते हैं।''

''तो इससे क्या'' राधा तुनक कर बोली।

''जरा तुम अपनी समधिन का सोचो जिसकी इकलौती संतान भी आँखों से इतनी दूर चली गई।'' अब कहो लड़की की माँ का कलेजा कितना बड़ा होता है कि खुशी-खुशी दिल के टुकड़े को अनजाने घर भेज देती है।''

अब राधा तसल्ली भरी मुस्कान लिए अपने घर जा रही थी।

रिक्शे वाला

जून की दोपहरी थी। उस दिन किसी कारणवश मुझे दफ्तर से जल्दी निकलना पड़ा। दफ्तर से आश्रम और वहाँ से दूसरी बस लेकर मैं फरीदाबाद पहुँची।

चिलचिलाती धूप से हाल बुरा था। हवा का कोई नामोनिशान नहीं था। कोई पत्ता हिलता तो हवा का अहसास होता। गर्मी में पसीने से मेरा हाल बुरा हो गया था। पसीना पोंछते हुए मैंने सड़क पार की और मेरी नजर रिक्शे वाले को ढूँढ़ने लगी।

''मैडम जी कहाँ जाना है।'' किसी रिक्शे वाले की आवाज सुनकर जैसे मैं नींद से जाग गई– ''हाँ, भैया, इतनी गर्मी में कोई रिक्शे वाला नजर नहीं आ रहा था। तुम लोगों को कमाई नहीं करनी होती।'' मैं थोड़ा चिड़े स्वर में बोली।

''मैडम जी, कमाई के लिए ही तो इतनी धूप में निकले हैं।''

''अच्छा चलो सेक्टर-16 तक कितने पैसे लोगे।''

''मैडम जी बीस रुपये लूँगा वहाँ तक'' रिक्शे वाले ने पसीना पोंछते हुए कहा।

''मैं रोज आती हूँ दस रुपये में, चलने वाली बात करो।''

''नहीं मैडम जी, बीस रुपये से कम नहीं लूँगा, बाकी आपकी मर्जी।'' उसके स्वर में दृढ़ता थी।

गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए मैं बिना कुछ आगे कहे छत वाले रिक्शे में बैठ गई।

मैं सोच रही थी कि क्या जिंदगी है इन लोगों की। तभी अचानक मेरा ध्यान रिक्शे वाले पर गया, वह एक ही हाथ से रिक्शा चला रहा था। मुझे लगा वह हीरोपंती दिखाने के लिए ऐसा कर रहा है।

इन्हीं ख्यालों में मैं घर पहुँच गई। रिक्शे से उतरी तो देखा रिक्शे वाले ने कमीज इस तरह लटका रखी थी कि लगता था बाजू अन्दर छिपा हुआ है, किन्तु मुझसे रहा न गया और मैं पूछ बैठी ''भैया एक ही बाजू से रिक्शा चला रहे थे। दूसरे में कोई तकलीफ है क्या?''

''मैडम जी, एक बाजू मशीन में आकर कट गई थी'' वह मुस्कुराते हुए बोला। मेरा मन तड़प उठा ''भैय्या जी मुश्किल नहीं होती।''

''होती है मैडम पर बीवी-बच्चों का पेट भरना है तो काम तो करना ही पड़ेगा।''

उसकी हिम्मत और मेहनत का जज्बा देखकर मैं खुश हुई, लेकिन अपने-आप पर शर्मिंदा थी, क्योंकि रिक्शा धीरे चलाने पर मैंने उसे टोका था। ''भगवान मुझे माफ कर देना, मुझसे भूल हुई।'' मन ही मन मैं पश्चाताप कर रही थी। मैंने दया में उसे कुछ ज्यादा पैसे देने चाहे जिसे उसने लौटाते हुए कहा ''मैडम जी मेहनत की रोटी खाता हूँ, भीख की आदत नहीं है मुझको'' कहते हुए वह चला गया और मेरी आँखों से आँसू की धार बह निकली, उसकी लाचारी पर नहीं बल्कि उसकी खुद्दारी देख कर।

आशीर्वाद

शनिवार की भीगी-सी शाम में सुनील अपने बीवी-बच्चों के साथ खूबसूरत पलों का लुत्फ उठा रहा था।

बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी और अंदर सब गर्म-गर्म पकौड़े और चाय का मज़ा ले रहे थे। चाय पीकर राधिका लूडो ले आई और सब उस खेल में मस्त हो गए।

कहीं से फिल्म आनंद का गीत ''कहीं दूर जब दिन ढल जाए'' धीमा-धीमा सुनाई देर रहा था।

खेल के बीच-बीच में छवि चिल्लाती- ''पापा, आपका टर्न है, आप कहाँ खो जाते हो बार-बार।''

''बेटा तुम खेलो- मैं थक गया हूँ'' कहते हुए सुनील उठने को हुए तो छवि ने हाथ पकड़ कर लाड़ जताया-''मुझे तो पापा के साथ खेलना अच्छा लगता है लेकिन पापा तो न जाने कहाँ गुम हैं, मुझे प्यार भी नहीं करते।''

''नहीं बेटा, ऐसा कुछ नहीं है'' अपनी भीगी आँखों को दूसरी तरफ छिपाते हुए सुनील ने कहा। नीरज घूरते हुए बोला-''अरे! पापा रो रहे हैं। उनकी आँखें गीली हैं।'' सभी एक स्वर में चिल्लाए- ''पापा क्या हुआ?'' अब तो सुनील की आँखें छम-छम बहने लगीं। अपने आँसू छिपाते हुए सुनील ने कहा- ''देखो बच्चो! जैसे तुम्हें मुझसे प्यार है, मेरे साथ समय बिताना अच्छा लगता है, उसी तरह मुझे भी अपने पापा से बहुत प्यार था और ऐसे मौसम में वह मेरे लिए समोसे जरूर लाते थे। आज तुम्हारा लाड़ देखकर मेरा बच्चा मन भी भावुक हो उठा।''

''बच्चो! आज अगर पिताजी हमारे बीच होते तो वह तुम सबका प्यार देखकर कितने खुश होते। बस, यही सोचकर मेरी आँखें भर आईं।''

दादी जो सब देख-सुन रही थीं, बोली- ''बेटा! आज तुम्हारे पिताजी नहीं हैं, लेकिन उनका पूरा आशीर्वाद हम सब पर साये की तरह है, इसीलिए तो यह घर इतना खुशहाल है।''

सुनील को ऐसा महसूस हो रहा था कि बाहर वातावरण में फैली नमी और खुशबू उसके भीतर अंतर्मन को सुखद अहसास से भिगो रही है।

राजनीति और इंसानियत

सन् 1984 में हमारी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधीजी की हत्या के बाद हुए दिल्ली के दंगों के समय हम साउथ दिल्ली में सरकारी आवास में रहते थे। उस दौरान मैंने अपने पिताजी, जो कि इंदिरा गांधी को बहुत मानते थे, उनका एक अलग ही रूप देखा।

उन दिनों हर तरफ गुंडागर्दी का माहौल था, चाहे वह सरकारी कॉलोनी थी या प्राइवेट कॉलोनी। हाथों में डण्डे और पेट्रोल की बोतलें लिए दहशतगर्द हर तरफ शिकार ढूंढ़ने में लगे थे।

''चलो, चलो इस ब्लॉक में चलो, यहाँ बहुत सरदार रहते हैं।'' झुण्ड के बीच से चीखने की आवाज़ें हमारे कानों में पड़ रही थीं। मैं भय से कांप रही थी, क्योंकि हमारे पड़ोसी सिख थे और मैं डर रही थी कि आंटी-अंकल और उनके छोटे मासूम बच्चों के साथ कोई अनहोनी न हो जाए।

तभी किसी सिरफिरे की आवाज़ अँधेरे में गूंजी- '' अगर कोई सरदारों या उनके परिवारों को शरण देगा, उन्हें भी काट दिया जाएगा।''

उस पल पड़ोसी अंकल से पिताजी ने कुछ बात की और उनके दोनों बच्चों, डिम्पल और बॉबी को हमने अपने बिस्तर के अंदर छिपा लिया। दहशतगर्दों को पिताजी ने इंदिरा जी के साथ हुए अन्याय पर अपनी पूर्ण सहमति जताकर अपनी बातों से फुसला लिया और वे दरिंदे हल्ला मचाते हुए दूसरी तरफ निकल गए। उनके जाते ही हम सबकी जान में जान आई। अंकल और आंटी के आँसू बह रहे थे, कुछ डर से और कुछ कृतज्ञता से।

मैंने पिताजी को सराहनापूर्ण नजरों से देखा तो वे बोले–''बेटा, राजनीति अपनी जगह और इंसानियत अपनी जगह। अब अपनी माँ को कहो, सबके लिए जल्दी से खाना लगाए।''

तब तक डिम्पल और बॉबी बिस्तर से बाहर निकल चुके थे और शहर के हालात से अनजान, आपस में खेल रहे थे।

मायका

रंगोली से रहा न गया और वह पति के साथ कुछ तोहफे लेकर अपने मायके पहुँच गई। खरीदारी में उसे एक घण्टा लगा और घर पहुँचने में दो घण्टे। आज उसके मम्मी-पापा के विवाह की वर्षगांठ है। वह सबको सरप्राइज़ देना चाहती थी, लेकिन सरप्राइज़ तो उसे ही मिल गया, जब वहाँ पहुँचकर भाभी ने तेवर दिखाते हुए कहा-"अरे रंगोली तुम आज फिर आ गई। अभी दस दिन पहले ही तो बुलाया था तुम्हें, भाई के जन्मदिन पर।"

रंगोली की आँखों में आँसू तैरने लगे तो पति ने बात संभाली-"अरे भाभी हम तो यहाँ से गुजर रहे थे तो मैंने सोचा कि आपसे मिलते जाएँ।"

मम्मी-पापा जब तक बहू के सामने कुछ कहने की हिम्मत जुटा पाते, तब तक रंगोली अपने पति का हाथ थामे दरवाज़े की चौखट से वापस मुड़ गई थी।

वह सोच रही थी कि मम्मी-पापा की लाड़ली बेटी को क्या अब मायके आने से पहले भाभी की इजाजत लेनी पड़ेगी। उसे महसूस हो रहा था कि विवाह के समय वह केवल तन से विदा हई थी लेकिन, आज मायके ने उसे तन और मन दोनों से विदा कर दिया है।

श्राद्ध

''बहू रानी अम्माजी का खाना निकाल कर मंडैरी पर रख दिया क्या?'' शकुंतला ने बहू को आवाज़ लगाई।

''ओह माँ जी, सॉरी, मैं तो आज भूल ही गई। अम्मा जी का खाना निकालना।''

''तुम्हें कितनी बार कहा है कि श्राद्धों के दिन हैं, सबसे पहले अम्मा जी को खिलाया करो।'' शकुंतला लगभग चीख कर बोली।

बहू रानी की आँखें छलछला उठीं, इसलिए नहीं कि शकुंतला उस पर चिल्लाई, बल्कि इसलिए कि जीते जी अम्मा को खाना कभी भी समय से नहीं मिलता था और कभी-कभी तो सबके खाने के बाद ही उनके कमरे में खाना भिजवाया जाता था।

''ओह! अब किस सोच में पड़ गई।'' शकुंतला फिर चिल्लाई।

''कुछ खास नहीं माँ जी, यही सोच रही हूँ कि अब फर्क नहीं पड़ता क्योंकि जीते जी अम्मा जी को सबसे आखिर में खाना खाने की आदत तो पड़ ही गई थी।'' कहते हुए बहू रानी माँ जी की बात अनसुनी करके अपने कमरे की तरफ तेज़ी से बढ़ गई।

दीवाली के तोहफे

"अरे डिम्पल तुम भी चलो न मेरे साथ, दीवाली के तोहफे बाँट आते हैं, सारे मित्रों और रिश्तेदारों में"- सुनीता ने बेटी को पुकारा।

"माँ उन्हें क्या जरूरत है, सभी तो रईस लोग हैं। इससे अच्छा तो यह है कि यह तोहफे हम गरीब लोगों की किसी बस्ती में बाँट आयें।" -डिम्पल का यह सुझाव माँ को पसंद नहीं आया।

"कैसी अनाप-शनाप बातें कर रही हो तुम, वे लोग भी तो हर साल तोहफे लेकर आते हैं तो हमारा भी तो उन्हें देना बनता है न!"-सुनीता थोड़ा गुस्से में बोली।

"माँ मैं तो कहती हूँ, तुम भी समझदारी दिखाओ और अपने दोस्तों को भी यही राय दो कि इस दीवाली गरीब लोगों की किसी बस्ती में जाकर ये तोहफे बाँट आएं और फिर देखना उनके बच्चों की सूनी आँखें दीयों की तरह कैसे चमक उठेंगी"-कहते हुए डिम्पल ने तोहफे वाला बैग उठाया और माँ का हाथ खींचते हुए गरीब बस्ती की ओर चल पड़ी।

गूंगी गुड़िया

आज कई वर्षों के बाद उसके धैर्य ने विराम ले लिया था और उसकी चुप्पी एक चीख बन कर उभरी थी। फिर पूरे घर में एक सन्नाटा छा गया था।

सबकी फरमाइशें, उलाहना, व्यंग्य और बंदिशों को वह कई सालों से सह रही थी। कहने को तो वह घर की मालकिन थी लेकिन, इस शर्त पर कि वह गूंगी गुड़िया बनी रहे।

लेकिन आज वह गूंगी गुड़िया बोल रही थी और उसका पति, बेटा, बेटी और बहू चुप-चाप सुन रहे थे, उसी की तरह धैर्यपूर्वक।

घर

डॉक्टर रमेशभान और उसका परिवार आज हवन की तैयारी में व्यस्त हैं। विस्थापन के तीस वर्षों के पश्चात उन्होंने सोसाइटी के नए फ्लैट में ग्रह प्रवेश की पूजा रखी है। मेहमानों और दोस्तों का आना जारी है।

''डॉक्टर भान बहुत बहुत बधाई''- उनके मित्र डॉक्टर संदीप पांडे सपरिवार वहाँ चहक रहे हैं।

''थैंक यू संदीप जी, आपका स्वागत है''- डॉक्टर भान ने गले लग कर मित्र का अभिवादन किया।

''भान साहब मैं खुश हूँ, आज आप अपने घर में प्रवेश कर रहे हैं'' - डॉक्टर संदीप फिर चहके।

''संदीप जी मेरे लिए यह घर नहीं सिर्फ मकान है। घर छोड़े तो मुझे तीस वर्ष हो गए हैं लेकिन हमारा घर अभी भी कश्मीर में ही है और असली गृह-प्रवेश तो तभी होगा, जब हम फिर से उसी घर में जा बसेंगे''-डॉक्टर भान ने भरी हुई आँखों से भावुक होते हुए अपने दिल की बात दोस्त से कही।

''आमीन''- डॉक्टर संदीप के मुँह से बरबस यह शब्द निकाल आया और सभी ने ताली बजा कर उनकी मंशा का अनुमोदन किया।

प्रकृति और लेखक

नदी पर लिखो और पहाड़ पर लिखो, सागर पर लिखो और वृक्षों पर भी लिखो। लिखो कविता, कहानी या लेख लिखो। लिखो और बस प्रकृति प्रेम पर लिखते जाओ।

फिर तुम वृक्ष काटो, नदी में कूड़ा फेंको, पहाड़ों से पत्थर निकालो और प्रकृति को दूषित करो क्योंकि वह कुछ कह नहीं सकती।

लेखक ने महसूस किया कि प्रकृति ने चीख कर उससे कहा- ''तुम लिखो, नदी पर गीत लिखो, जंगल पर कहानी लिखो और सागर पर उपन्यास।''

''हाँ मैंने तुम पर असंख्य कविताएं, कहानियाँ, उपन्यास और लेख लिखे इसलिए अब तुम मेरी ऋणी हो।''-लेखक ने गर्वित हो कर कहा।

''मैं तुम्हारी ऋणी हो जाऊँगी लेखक, यदि तुम सिर्फ लिखोगे नहीं, मुझे महसूस करोगे, मेरी आहें सुनोगे और मुझे कलुषित न करने का प्रण भी लोगे''-प्रकृति ने भीगे नयनों से अपने मन का दुख बयान किया।

कंक्रीट के जंगल

''कुमुद के पापा सुनते हो, आज तो पीछे से भी नई दीवारें चढ़ गई हैं''- आशा ने पति को आवाज लगाई जो अभी तड़के बिस्तर में अंगड़ाई ले रहे थे।

''अरे, इसमें तो सरकार भी कसूरवार है, जिसने बिल्डर्स को चार-चार मंजिलें बनाने की अनुमति दे दी है''- पति देव ने उठते हुए कहा।

आशा रुआंसी हो कर बोली- ''जब तक हमारी नन्ही कुमुद थोड़ी बड़ी होगी तब तक तो यह शहर कंक्रीट का जंगल बन जाएगा। वह न तो चिड़िया का चहचहाना सुन पाएगी, न ही आकाश का नीलापन देख पाएगी और न ही सूरज की किरणों से खेल पाएगी।''

''तुम सही कह रही हो, आने वाले समय में अगर पेड़ों की जगह यह दीवारें इसी तरह उगती रहीं तो आने वाली पीढ़ी ईश्वर प्रदत इस प्राकृतिक दौलत से लगभग महरूम हो जाएगी।'' पति देव पिछले आँगन से ऊँची-ऊँची नई दीवारों को एक टक देखते हुए चिंतित स्वर में बोले।

बेघर

आज सवेरे नाश्ता बनाते समय एक बच्चे की चीखें सुन कर मैं आँगन में बाहर निकली तो मालूम हुआ कि मजदूर माँ-बाप अपने बच्चे को लेकर नई जगह काम पर जा रहे हैं।

माजरा दरअसल यह था कि हमारे पड़ोस में लगभग डेढ़ वर्ष से जो तिमंजिला कोठी बन रही थी, वह कुछ दिन पहले बिल्डर ने बेच दी। सभी मजदूरों को बिल्डर ने आज से दूसरी साइट पर काम करने का निर्देश दिया और सभी मजदूर अपना परिवार लेकर चले गए लेकिन, दीनू मिस्त्री के तीन साल के बच्चे ने रो-रो कर आसमान सिर पर उठा लिया कि वह कहीं नहीं जाएगा, यहीं रहेगा, इसी कोठी में।

दुखी हो कर दीनू मिस्त्री ने अपने रोते हुए बच्चे को एक तेज तमाचा मारा तो उसकी माँ उसे गोद मे उठा कर चिल्लाई- ''अरे क्यों मारे हो, बबुआ तो नासमझ बई, यो को का मालूम कि यो उसको घर नाही।''

मैं दरवाज़े पर खड़ी सोच रही थी कि यह मजदूर लोग कितना बड़ा दिल रखते हैं। दिन-रात खून पसीना बहाकर, इन कोठियों को बनाते हैं और फिर हमारे जैसे लोग इन्हें खरीद कर इन में आ बसते हैं और मजदूरों के परिवार वापस बेघर हो कर सड़क पर आ जाते हैं।

केवल एक बार नहीं, अनेक बार बेघर हो जाते हैं यह मजदूर।

सूरज देवता

''बहू चार दिन से कपड़े बिछे हुए हैं लेकिन, सूखने का नाम नहीं ले रहे हैं।'' – संध्या परेशान अपने साथ ही बड़बड़ा रही थी।

''माँ जी सूख जाएंगे''– बहू रानी ने तसल्ली देते हुए कहा।

''अरे बेटा, दो दिन के लिए सबने बाहर भी जाना है, इन्हें तो समेट कर जाना पड़ेगा, इसीलिए परेशान हूँ। न जाने सूरज देवता को क्या हो गया, किरणों में जैसे कोई तपिश ही नहीं है।''

''माँ जी सूरज बेचारे को क्यों दोष दे रही हो। हम सब तो अपनी करनी का फल भोग रहे हैं।''

''क्यों बेटा, हमने ऐसा क्या कर दिया''– माँ जी हैरान हो कर बोली।

''माँ जी हमने पर्यावरण को दूषित करके प्रदूषण इतना फैला दिया है कि सूरज देवता अब स्वयं ठिठुरने लगे हैं, तो फिर वह आपके कपड़े कैसे सुखाएंगे।'' अपनी बात कह कर बहू रानी मुस्कुराते हुए अपने कक्ष मे चली गई और माँ जी आँगन में हाथ जोड़ कर सूरज देवता से अपनी गलतियों की माफी माँग रही थीं।

बोझ

दमयन्ती के पति को गुजरे एक महीना बीत गया था और वह इस आस में थी कि बेटा गौरव उसे अपने साथ घर चलने का आग्रह करेगा। उसे अपने बेटे से पूरी उम्मीद थी कि इस मुश्किल वक्त में वह उसे इस घर में अकेले नहीं छोड़ेगा। लेकिन, उसकी उम्मीदों पर पानी फिर गया जब गौरव ने माँ को बताए बिना अपना और पत्नी का वापसी का टिकट कर लिया।

जब दमयन्ती को पता चला तो वह रोते हुए बोली- ''बेटा यहाँ मैं अकेले किसके सहारे रहूँगी, मुझे भी अपने साथ ले चलता।''

दमयन्ती को रोता देख, उसकी ब्याहता बेटी, जो यह सारा तमाशा देख रही थी, माँ के आँसू पोंछते हुए बोली- ''माँ अब तुम यहाँ अकेली नहीं रहोगी, तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।''

दमयन्ती ने बेटी को बाहों में भरते हुए कहा- बिटिया मुझे माफ कर देना, तुम्हारे जन्म पर सब दुखी थे और कह रहे थे कि घर का बोझ बढ़ गया बेटी आने से, लेकिन आज तो तुमने सिद्ध कर दिया कि बेटियाँ बोझ नहीं होतीं बल्कि बूढ़े माँ-बाप का बोझ उठाने में सक्षम होती हैं।''

यात्रा

कछुआ और खरगोश की बातचीत चल रही थी। खरगोश ने कछुए से पूछा- ''यार तुम्हारा लक्ष्य क्या है।''

कछुआ कुछ सोचते हुए बोला- ''दोस्त मेरा ध्यान, लक्ष्य से ज्यादा अपनी यात्रा का मजा लेने मे है।''

''यह क्या बात हुई, अगर ऐसा है, तो दौड़ लगाते हैं, देखते हैं लक्ष्य पर कौन पहले पहुँचता है'' -तुनक कर खरगोश बोला।

फिर वही हुआ जिसका सभी को अंदेशा था। उत्तेजित खरगोश और शांत कछुए की दौड़ की परीक्षा शुरू हुई। खरगोश ने ऐसी दौड़ लगाई कि मंजिल पर पहुँचने की घबराहट और अति आत्म-विश्वास के कारण वह आधे रास्ते में ही हांफने लगा। फिर वह न तो यात्रा का मज़ा ले पाया और न ही लक्ष्य को छूने में सफल रहा।

दूसरी तरफ कछुआ बिना किसी भय के और सामान्य भाव से यात्रा का मज़ा लेते हुए दौड़ रहा था। उसने अपनी यात्रा के प्रत्येक पड़ाव का आनंद लिया और खरगोश से पहले अपनी मंजिल को भी छू लिया। उनके मित्र हैरान थे और तालियाँ बजा कर कछुए की जीत की खुशी मना रहे थे।

सुहागवती भव:

''भागवन्ती आज मैं बहुत खुश हूँ''- पाठक जी ने अपनी पत्नी राजरानी को संबोधित करते हुए कहा।

''जरा मुझे भी तो पता चले क्यों''- राजरानी मुस्कुराते हुए बोली।

''मैं सोच रहा था, बेटा बेटी के ब्याह की जिम्मेदारी पूरी हो गई, अब तो गंगा स्नान कर आऊँ'' -पाठक जी कहते हुए, खाँसने लगे और कुर्सी से उठने को हुए तो, भागवन्ती तेजी से पानी का गिलास थमाते हुए, बेचैन स्वर में बोली- ''देखो जी यह तो सच है कि आपने बच्चों को ब्याह दिया लेकिन, मेरे लिए तो सब ठीक तब होगा जब आप अपनी सेहत का ध्यान ठीक से रखेंगे।''

पाठक जी ने पत्नी के सिर पर हाथ रखा तो अनायास ही उनके मुँह से निकला- ''सुहागवती भव:''

राजरानी ने भावुक हो, भरी हुई आँखों से पाठक जी को देखा और उनके दोनों हाथों को चूम लिया।

बैलेंस

कई दिनों बाद आज दोस्तों की महफ़िल सजी थी, दो कुँवारे और एक शादीशुदा।

''अरे यार शादी के तीन माह बाद, तुम्हें आज दोस्तों की याद आई है, लगता है भाभी जी के साथ घर में मन रम गया है''- एक कुँवारे ने कहा तो दूसरे कुँवारे ने भी छूटते हुए कहा- ''साले किस्मत वाले हो जो इतनी समझदार माँ और पत्नी मिली है कि घर-गृहस्थी बिना किसी पंगे के चल रही है।''

अब शादीशुदा दोस्त के सफाई देने की बारी थी- ''सबको यही लगता है कि मेरी माँ और बीवी बहुत समझदार हैं। अरे, यह किसी की समझ में नहीं आता कि मेरा एक दिन माँ को समझाने मे और दूसरा दिन बीवी को मनाने में निकाल जाता है। इसी तरह चलता रहा तो मेरी आधी ज़िंदगी तो उनको बैलेंस करने में निकल जाएगी।''

अब दोनों कुँवारे मुस्कुराते हुए शादीशुदा दोस्त को बड़े प्यार से सुखी गृहस्थी के गुर समझा रहे थे।

उम्मीद

समीरा और पंकज की ग्रहस्थी बहुत मज़े में चल रही थी। दोनों में अटूट प्यार था। लेकिन, एक हादसे ने उनकी दुनिया ही बदल दी।

दोनों हमेशा दफ्तर के लिए एक साथ निकलते लेकिन, समीरा पंकज से पहले घर पहुँचने का प्रयास करती ताकि पंकज के आने से पहले वह रात के खाने की तैयारी कर ले। लेकिन, उस शाम वह घर नहीं पहुँची और पंकज पूरी रात उसका इंतज़ार करता रहा। जहाँ-जहाँ हो सकता था, उसने फोन लगाया लेकिन कुछ पता न चला। अब वह सवेरा होने के इंतज़ार में था कि पुलिस स्टेशन जाकर रिपोर्ट लिखवाए। परेशानी में न जाने कब उसकी आँख लग गई और नींद खुली सवेरे डोर बैल की आवाज़ से। वह हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ। उसने दरवाज़ा खोला और वहाँ खड़ी समीरा को बदहवास हालत में देख कर वह ठिठक गया।

''कहाँ थी तुम रात भर, फोन भी नहीं उठाया''-पंकज लगभग चिल्लाया।

समीरा उससे गले लग कर कांपती आवाज़ में कहने लगी- ''रास्ते में बस खराब हो गई और सब उतर गए। मैं भी उतर गई और जल्दी घर पहुँचने के लिए ऑटो कर लिया, उसमें ऑटो ड्राइवर के साथ एक सवार भी बैठा था। वे ट्रैफिक जाम का फायदा उठा कर मुझे गलत रास्ते से बहुत दूर वीराने में ले गए और फिर जबरन उन्होंने...'' आगे के शब्द समीरा के मुँह में ही रह गए और वह दहाड़े मार कर रोने लगी। उसे उम्मीद थी कि पंकज उसे तसल्ली देकर, प्यार से उसका हौसला बढ़ाएगा।

लेकिन यह क्या, पंकज ने उसे खुद से अलग करते हुए कहा- ''समीरा यह तुमने क्या किया, खानदान की इज्जम पर दाग लगा दिया और मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा।''

''पंकज यह क्या कह रहे हो तुम, इस मे मेरा क्या कसूर'' -समीरा ने मुश्किल से खुद को संभालते हुए कहा लेकिन, अगले ही पल पंकज की हिकारत भरी नज़रों को वह झेल नहीं पाई और बिना किसी उम्मीद के अपने आँसू पोंछ कर दूसरे कमरे में चली गई।

गुनाह

कुछ खरीदारी करने आज जब मैं बाज़ार पहुँची तो काफी भीड़ देखी। लोग पनसारी की दुकान के आगे हल्ला कर रहे थे। उत्सुकतावश मैं भी उस दुकान के नजदीक पहुँची। भीड़ चीखती हुई एक औरत से मैंने उसकी परेशानी का कारण पूछा तो वह रोते हुए बोली- ''मैडम जी, इस कमीने दुकानदार ने मेरे मर्द का एक हाथ काट दिया।''

''लेकिन क्यों?'' -मैंने पूछा।

''मैडम जी, मेरा मर्द इसकी दुकान पर काम करता है। इसने पिछले दो महीने से उसको पगार नहीं दी, उलटे दुगना काम लेता रहा। घर की और बच्चों की हालत देख, मैंने ही अपने मर्द को पगार लाने को कहा था और इस नामुराद ने पगार माँगने पर उसका हाथ ही काट दिया'' -कह कर वह औरत ज़ार-ज़ार रोने लगी।

मैंने दुखी मन से उसके आँसू पोंछे और कुछ रुपये उसके हाथ में रखे तो वह तड़पते स्वर में बोली- ''मैडम जी क्या अपनी मेहनत की कमाई माँगना कोई गुनाह है और उस गुनाह की इतनी बड़ी सज़ा होती है।''

मैं निरुत्तर खड़ी, उसकी तड़प को अपने भीतर तक महसूस कर रही थी।

चुप्पी

कॉलेज में इतिहास की क्लास चल रही थी। प्राध्यापक बच्चों को लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन से जुड़े कुछ खास वाक्यात बता रहे थे और बच्चे भी बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

प्राध्यापक बोले- ''शास्त्री जी का प्रसिद्ध नारा था- जय जवान जय किसान।''

तभी एक छात्र बोल पड़ा- ''सर जब आज का जवान देश की सीमा पर गोलियाँ खा रहा हो और किसान देश की सीमा के अंदर कुचला जा रहा हो तो इस नारे की क्या अहमियत रह जाती है।''

प्राध्यापक को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था और उसकी चुप्पी बता रही थी कि उसके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

सम्बोधन

''श्रीमती जी, सुनती हो''- रामप्रसाद वर्मा ने अपनी बीवी को आवाज़ लगाई।

''श्रीमती जी कहाँ हो, सुनती हो''- रामप्रसाद जी ने दुबारा प्यार से पुकारा।

''क्या है, क्यों चिल्ला रहे हो जी''- कमला ने गुस्से में कहा।

''श्रीमती जी, नाराज़ क्यों हो रही हो।''

''क्यों न होऊँ, तुम्हें कितनी बार कहा है। यह श्रीमती शब्द मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। अगर नाम से नहीं पुकारना, तो मिसेज वर्मा कहो'' -कमला ने बुरा-सा मुँह बनाते हुए कहा।

अब रामप्रसाद जी कुछ गंभीर हो कर बोले- ''तुम्हें श्रीमती जी का अर्थ पता है क्या, नहीं पता तो मैं बताता हूँ, श्री अर्थात् लक्ष्मी और मति यानि बुद्धि अर्थात सरस्वती। जिसमें लक्ष्मी और सरस्वती एक साथ निवास करती हैं, उसे श्रीमती कहते हैं। मैं तुम्हें इतना सम्मान देकर संबोधित करता हूँ और तुम हो कि मिसेज, मैडम विदेशी शब्दों के सम्बोधन को ही अपनी शान समझती हो।''

कमला कुछ रुआँसी और कुछ मुस्कुराती हुई बोली- ''यह मुझे आज समझ आया कि आप मेरा कितना सम्मान करते हैं श्रीमान जी।''

सुनसान गली

''आपकी गली तो बहुत सुनसान लग रही है''- घर आए मेरे पति के मित्र ने कुछ सोचते हुए कहा।

मेरे पति बोले- ''यार कुछ साल पहले तक तो इस गली मे बहुत रौनक रहती थी।''

''तो फिर अब'' -मित्र ने पूछा।

तभी मैं चाय बना कर ट्रे में लाई, तो भाईसाहब मुझसे मुखातिब हुए- ''भाभी जी घर में बच्चे नजर नहीं आ रहे, आज तो छुट्टी का दिन है।''

मैंने चाय पकड़ाते हुए, रुँधे हुए गले से कहा- ''भाईसाहब दोनों बेटे अमेरिका चले गए पिछले माह और घर एक दम सूना हो गया।''

पतिदेव भी भावुक हो कर बोले- ''यार यह घर क्या, यह गली ही सूनी हो गई है। अधिकतर घरों से बच्चे विदेश में जा कर बस गए हैं और रह गए यहाँ अकेले बुजुर्ग माता-पिता। जब तक सबके बच्चे छोटे थे, यह गली आबाद थी और आज हर घर की खिड़की से सूनी आँखें कुछ तलाशती नज़र आती हैं, शायद गुजरे दिनों की परछाईयाँ।

आदत

श्रीमती मल्होत्रा के घर में मंजू का आज पहला काम का दिन था। किसी की सिफारिश से उसे वहाँ दोनों समय खान बनाने का काम मिल गया था। मंजू बहुत खुश थी कि अब वह अपने बच्चों की स्कूल की फीस भर सकेगी।

सुबह जब वह काम पर निकल रही थी तो उसके पति ने कहा- "अरे, खाना क्या बांध रही हो, वहाँ तो खाने का ही काम करने जा रही हो, मालकिन तो भरपेट खाना खिलाएगी।" मंजू ने सहमति में गर्दन हिलाई और मुस्कुराते हुए काम पर निकल गई।

दिनभर मंजू ने मन लगा कर काम किया और खाना बनाने के अलावा मालकिन के कहने पर कई अन्य काम भी चुपचाप करती रही। खाना बनाते समय उसने अपने लिए भी दो रोटियां बना कर रख दीं। खाना परोसने के बाद, वह अभी बैठी ही थी कि मालकिन रसोई घर में मुआयना करने आई और कर्कश स्वर में बोली- "मंजू यह दो रोटियां ज्यादा क्यों बनाई है।"

इससे पहले कि मंजू कुछ कह पाती, मालकिन ने उसे पैनी नजर से घूरते हुए कहा- "चलो आज तुम्हारे काम का पहला दिन है सो माफ किया, कल से यह मनमर्जी नहीं चलेगी। अब यह रोटी बाहर गली मे कुत्ते को खिला कर जल्दी आओ और काम पर लग जाओ।

मालकिन का बेटा जो यह सब देख रहा था बोला- "माँ मंजू आंटी को भी तो भूख लगी होगी, यह रोटी उसी को दे दी होती।"

"चुप, बेवकूफ़, अगर आज इसे रोटी दे दी, तो इसकी तो आदत ही बन जाएगी, रोज़ यहाँ खाना खाने की।"

''माँ आदत तो कुत्ते को भी पड़ जाएगी'' -बेटा व्यंग्य के लहजे में बोला तो माँ गुस्से से चिल्लाई ''बेकार की बहस मत कर। कुत्ता दुबारा आया तो उसे तो पत्थर मार कर भगा सकते हैं लेकिन, मंजू से तो काम लेना है न, उसे तो पत्थर...'' आधी-अधूरी बात बीच में छोड़ मालकिन मंजू को रात के खाने की तैयारी के निर्देश देने लगी।

मॉडल

''यार इस तौलिए के विज्ञापन के लिए कोई अच्छी मॉडल ढूँढ़ जो सस्ती भी हो और नखरे भी कम करे'' विक्की अपने दोस्त और बिजनेस पार्टनर संजय के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला।

''वह तो ठीक है यार लेकिन बेकार का खर्चा क्यों बढ़ाना। हमारे सारे आइटम तो मर्दों के लिए हैं, लड़की मॉडल लेने से क्या फायदा''-संजय ने अपनी राय रखी तो विक्की हँसते हुए बोला- ''यार तू कितना भोला है, देखता नहीं आजकल साबुन से लेकर ट्रैक्टर तक के विज्ञापन में लड़की मॉडल ही होती हैं। उनके जलवों और अदाओं से ही तो बाज़ार में चीजों की बिक्री बढ़ती है और ऊँचे दाम निर्धारित होते हैं।''

''विक्की तू सही कह रहा है, मैं कल ही ढूँढ़ता हूँ एक खूबसूरत मॉडल अपने तौलिए के दाम बढ़ाने के लिए''-अपने मुनाफे के बारे में सोचता हुआ, संजय बोला।

सक्षम

''अजी सुनते हो, कल जीजा जी एक बहुत बढ़िया रिश्ता लेकर आए थे, अपनी सुमी के लिए'' माला ने अपने पति राजीव का ध्यान खींचना चाहा, जो सुमी के साथ उसके भविष्य की योजना बनाने मे व्यस्त थे।

''आता हूँ भाग्यवान, बस दो मिनट में'' कहते हुए राजीव माला के सामने आ कर बैठ गया और बोला- ''कहो क्या बात है।''

''कल जीजा जी एक बहुत अच्छे लड़के का रिश्ता लाए थे सुमी के लिए'' माला ने खुशी जाहिर करते हुए अपनी बात दोहरायी।

''लेकिन सुमी अभी छोटी है, पढ़ाई हाल ही पूरी हुई है और मैं चाहता हूँ कि शादी से पहले वह अपनी योग्यता के बल पर कोई नौकरी प्राप्त करे।'' राजीव ने अपनी मंशा बताते हुए माला को समझाने की कोशिश की। ''देखो जी ऐसा रिश्ता बार-बार नहीं आता। लड़का जान-पहचान का है, सुशिक्षित है, अच्छा कमाता है और उन्हें पढ़ी-लिखी लेकिन घरेलू लड़की चाहिए तो हमें क्या दिक्कत है।'' माला ने दबाव डाला और बेटी को पुकारा ''सुमी तुम्हारी पढ़ाई अब पूरी हो गई है और अगर तुम विवाह के लिए हामी भर दो तो बेटा मैं भी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँगी।''

सुमी जो सारी वार्तालाप सुन रही थी, माँ का हाथ थाम कर बोली ''माँ एक बात कहूँ, मेरा ब्याह करके तुम अपनी जिम्मेदारी दूसरे कंधों पर डालना चाहती हो लेकिन माँ, वास्तव में तुम तब इस जिम्मेदारी से मुक्त हो पाओगी जब तुम्हारी बेटी स्वयं अपनी जिम्मेदारी उठाने में सक्षम हो जाएगी।''

राजीव ने ताली बजा कर, बेटी के इस प्रस्ताव पर मोहर लगा दी थी।

कोरोना काल का सत्य

घर में कोरोना के नए रूप ओमिक्रॉन पर बातचीत के दौरान बेटा बोला- ''माँ यह वर्ष 'कोरोना काल' नाम से ही विश्व के इतिहास में दर्ज हो जाएगा।''

''लेकिन भारत में तो यह वर्ष नैतिकता गिरने की चरम सीमा छूने के लिए भी दर्ज होना चाहिए।'' मैंने उसकी बात में अपनी बात जोड़ते हुए कहा।

''वह कैसे माँ'' बेटा जानने को इच्छुक हुआ, तो मैंने उसे समझाया- ''बेटा कुछ महीने पहले जब देश में कोरोना संक्रमण ने लोगों को अपनी चपेट में लिया तो कई राज्यों के अस्पतालों में बैड और ऑक्सीजन की कमी की समस्या हो गयी और इसके ऊपर कुछ दुष्ट लोगों ने अपने मुनाफे के लिए इंसानियत का खून कर दिया। उनकी बदौलत कई ऑक्सीजन के टैंकर मंजिल पर पहुँचने से पहले ही लापता हो गए, कोरोना वायरस के वैक्सीन चोरी हो गए और इंसान इतना ही नहीं गिरा बल्कि यह भी सुनने में आया कि फर्जी रेमेडेसिविर बेच रहा गैंग लोगों की जान से खेल कर पैसा कमा रहा था।''

मेरी बेटी जो वहाँ बैठी हमारा वार्तालाप चुपचाप सुन रही थी, तुरंत बोली- ''लेकिन माँ तुम भूल रही हो कि हमारे कर्मठ डॉक्टरों और नर्सों ने अपनी जान पर खेल कर कितनी सहनशीलता से हजारों कोरोना पीड़ितों का इलाज किया। बहुत से अच्छे और ईमानदार लोगों ने उस दौरान दिहाड़ी मजदूरों और निम्न वर्ग के लोगों की आर्थिक मदद की। कोरोना पीड़ित लोगों के घरों में भोजन पहुँचाया और अपनी जान की परवाह न करते हुए संक्रमित शवों का क्रिया-कर्म भी किया।''

''हाँ बिटिया, तुम ठीक कह रही हो, शायद ऐसे ही कुछ लोगों की वजह से यह धरा अभी भी अपनी धुरी पर घूम रही है।'' मैंने अपनी नम आँखों को पोंछते हुए कहा तो दोनों बच्चे एक स्वर में बोले- ''भारत माता की जय।''

शाश्वत प्रेम

वह बुजुर्ग दंपति हमारे पड़ोस में रहता था। उनकी दो ब्याहता बेटियाँ उसी शहर में रहती थी और इकलौता बेटा ब्याह करके विदेश में बस गया था। इस उम्र में उन दोनों की दुनिया उस एक कमरे के दो पलंगों पर ही सिमटी हुई थी। बेटियाँ कभी-कभी मिलने आ जाती थीं और पड़ोसी होने के नाते हमसे भी उनकी दुआ सलाम हो जाती थी। उन्होंने मुझ पर विश्वास कर के कह रखा था कि माँ और बाबा इस उम्र में भी बच्चों की तरह लड़ते हैं तो, मैं उनका ध्यान रखूँ।

मैं आते-जाते कभी-कभी अंकल आंटी से मिल जाती। मैं जब भी वहाँ जाती तो वे दोनों अक्सर किसी न किसी बात पर बहस करते हुए मिलते और मुझे देखते ही वे शांत हो जाते। एक दिन मैंने उन्हें प्यार से सुझाया- ''अंकल आप दोनों बहस करके अपना मूड खराब करते हैं, इससे तो अच्छा है कि आप दोनों अलग-अलग कमरे में विश्राम किया करें। दोनों ने प्रतिक्रिया में एक लंबी साँस लेकर चुप्पी साध ली और में वापस घर आ गई।

उस दिन के बाद से अंकल-आंटी के बीच में मैंने कभी कोई बहस और तकरार नहीं सुनी, यह बदलाव शायद इस भय से आया कि कोई उन्हें अलग न कर दे।

तब मेरी समझ में यह बात आई कि उनकी आपसी बहस तो शायद समय व्यतीत करने का एक बहाना है, वरना आज भी उनमें शाश्वत प्रेम का सागर बह रहा है।

घाटे का सौदा

हमने हमेशा से यही सुना और देखा था कि पानी और हवा तो ईश्वर प्रदत ऐसी बहुमूल्य नियामतें हैं, जो आदमी को जिंदा रहने के लिए, बिना कुछ खर्च किए ही मिल जाती हैं।

हमें जब ये नियामतें, बेमोल और आसानी से मिल रही थीं तो हमने इनकी कद्र नहीं की। नदियों को दूषित किया, पानी पीने लायक नहीं रहा और हमने इसका व्यवसाय शुरू कर दिया। आज कोरोना की बीमारी ने हमको मुफ़्त हवा लेने लायक भी नहीं छोड़ा तो ऑक्सीजन का सौदा शुरू हो गया।

अपनी गंदी मनोवृत्ति और करतूतों से हम दूषण-प्रदूषण फैलाते रहे और ईश्वर से प्राप्त इन नियामतों से महरूम होते रहे।

इस धरती पर मनुष्य से मूर्ख कोई हो सकता है क्या, जिसने जिंदगी का सौदागर बनकर हमेशा घाटे का ही सौदा किया।

आभासी दुनिया

''बेटा मुझसे भी तो कुछ साझा किया करो। तुम्हारी आज की पीढ़ी अपनी आभासी दुनिया पर ही ज्यादा विश्वास करती है। अपनी हर कामयाबी को कमेंट्स और लाइक्स से जोड़ कर देखती है और इसी में जीती है।'' मधु ने अपने बेटे मनु को समझाते हुए कहा। वह फेसबुक और इंस्टाग्राम की दुनिया में विचरण कर रहा था।

''माँ तुम्हें क्या मालूम, तुम तो अपने रसोईघर की दुनिया में ही रहती हो'' मनु समझदारी दिखाते हुए बोला।

''बेटा इस आभासी दुनिया में सभी संवेदनाएँ लुप्त हो रही हैं। तुम्हें मालूम है कल रास्ते में एक दुर्घटनाग्रस्त लड़के को किसी ने उठा कर अस्पताल नहीं पहुँचाया, बल्कि सब उसका वीडियो बनाने मे लगे रहे और कुछ ही देर में सबकी आँखों के सामने उस लड़के ने दम तोड़ दिया। अगर आभासी दुनिया का जुनून न होता तो शायद आज वह लड़का जिंदा होता। बेटा मैं चाहती हूँ कि तुम इस आभासी दुनिया की मृगतृष्णा में खो कर यथार्थ की दुनिया से बहुत दूर न हो जाओ।''

माँ से यह सारा घटनाक्रम सुन कर मनु की आँखें भर आईं और बहते आँसुओं के साथ उसकी आभासी दुनिया का मायाजाल भी बह गया। वह भावुक हो कर माँ से लिपट गया।

आशमा कौल

श्रीनगर, कश्मीर में जन्मी और दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षित आशमा कौल हिन्दी की सुपरिचित कवयित्री हैं। रचनाएं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित। अब तक छह काव्य संग्रह प्रकाशित हैं- 'अनुभूति के स्वर', 'अभिव्यक्ति के पंख', 'बनाए हैं रास्ते', 'ज़िंदगी एक पहेली', 'जन्नत-ए-कश्मीर' तथा 'बीज ने छू लिया आकाश'।

विभिन्न साहित्यिक मंचों पर आशमा कौल की उपस्थिति नियमित बनी रही है। सर्वभाषा राष्ट्रीय कवि सम्मेलन (कटक) में बतौर कश्मीरी अनुवाद-कवयित्री के रूप में आपकी सहभागिता रही। आप कई साहित्यिक संस्थाओं की सदस्य हैं। जहाजरानी एवं परिवहन मंत्रालय की त्रैमासिक पत्रिका नवतरिण में तीन वर्ष, बतौर उप संपादक कार्य किया।

सामाजिक कार्य : महिलाओं को समर्पित गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ), 'नारी उत्थान शिक्षण से सशक्तीकरण' की सक्रिय सदस्य हैं। गरीब बच्चों को समर्पित गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) उड़ान की सक्रिय सदस्य।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्राप्त सम्मान :

- अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन, गाजियाबाद द्वारा 'राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान' (2006)
- 'अनुभूति के स्वर' काव्य संग्रह पर 'शब्द गंगा साहित्य सम्मान', मेरठ (2006)
- राष्ट्रीय राजभाषा पीठ से 'भारती भूषण' एवं 'शब्द माधुरी सम्मान' (2007)
- साहित्यांचल संस्थान, भीलवाड़ा, राजस्थान से काव्य कृतियाँ 'अभिव्यक्ति के पंख' और 'अनुभूति के स्वर' (2007)
- भारतीय साहित्यकार संसद समस्तिपुर, बिहार द्वारा काव्य कृति 'अभिव्यक्ति के पंख' पर 'महाकवि रसखान राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान' (2008)

- ब्रह्मशक्ति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में स्वर्गीय साहित्यकार गोपालदास नीरज द्वारा सम्मानित (2009)
- कश्मीरी सेवक समाज (रजि.) फरीदाबाद में प्रतिष्ठित सिने अभिनेता अनुपम खेर द्वारा काव्यकृति 'अभिव्यक्ति के पंख का लोकापर्ण' एवं सम्मान (2011)
- अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार समिति, भोपाल द्वारा काव्य कृति 'बनाए हैं रास्ते' के लिए अम्बिका प्रसाद दिव्य रजत अलंकरण (2011)
- 'डी.ए.वी. महाविद्यालय' फरीदाबाद, हरियाणा द्वारा 'काव्य-रतन' सम्मान (2012)
- 'साहित्य सभा कैथल' द्वारा 'स्मृति साहित्य सम्मान' (2013)
- साहित्य समर्था, जयपुर द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय' कुमुद टिक्कू लघु कथा प्रतियोगिता में द्वितीय पुरुस्कार (2013)
- 'इण्डो-पाक तन्ज़ीमें एहसासात (रजि.), हरियाणा द्वारा 'साहित्य शिल्पी सम्मान' (2013)
- आगमन साहित्य एवं सस्कृति समुह, फरीदाबाद द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट काव्य पाठ हेतु स्वर्गीय गीतकार कुंवर बेचैन द्वारा सम्मानित। (2014)
- 'कश्मीरी सेवक समाज' (रजि.) फरीदाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में काव्य कृति 'जन्नते कश्मीर' का लोकार्पण एवं सम्मान समारोह (2016)
- नारी अभिव्यक्ति मंच 'पहचान' फरीदाबाद अखिल भारतीय माँ शकुंलता कपूर स्मृति प्रतियोगिता में वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्‌गल द्वारा श्रेष्ठ लघुकथा सम्मान से सम्मानित (2018)
- 'महिला काव्य मंच' दिल्ली द्वारा साहित्य सेवाएँ प्रदान करने हेतु सम्मानित (2019)

संप्रति : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार में (सेवा निवृत्त) राजपत्रित अधिकारी

सम्पर्क :

2665, सेक्टर-16, फरीदाबाद-121002 (हरियाणा)

मो. : +91-9868109905

ई-मेल : kaulashma@gmail.com, ashmakaul@yahoo.com



आशमा कौल

रचनाधर्मिता सामाजिक सरोकारों से सीधे तौर पर जुड़ी है। रचना अपना आधार अनुभूतियों के माध्यम से समाज से ही ग्रहण करती है और जिन अनुभवों से इन अनुभूतियों का परिपाक होता है वे भी सामाजिक जीवन से ही मिलते हैं। ऐसे में रचनात्मक अभिव्यक्ति को समाज से पृथक कर देखना न तो संभव है, न उचित। आशमा कौल की ये लघुकथाएं इन्हीं सामाजिक सरोकारों का परिपक्व लेखा प्रस्तुत करती हैं।

सामाजिक विसंगतियों और विडम्बनाओं पर रचनाकार की तीक्ष्ण दृष्टि है, फलतः हर लघुकथा अपने चरम पर पहुंचकर पाठक के मन में इन विषमताओं के प्रति तिलमिलाहट भर देती है और गौण किन्तु समर्थ रूप से यह संदेश भी प्रेषित कर देती है कि समाज की पुनर्रचना समय के साथ साथ होते रहना अनिवार्य है। मनुष्य स्वभाव के दोगलेपन पर आशमा कौल बड़े सलीके से वार करती हैं। कम शब्दों में बड़े संकेत, यही लघुकथा की कसौटी है और इस संग्रह की रचनाएं इस कसौटी पर खरी उतरती हैं।

₹ 150/-

ISBN : 978-93-5536-074-8

बोधि जन-संस्करण

आवरण चित्र : प्रवेश सोनी, कोटा #9782045060